CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/4/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. प्रगति मैदान में बहुत से मेले लगते हैं, लेकिन विश्व पुस्तक मेला का अपना आनंद है। यह मेला नहीं, पुस्तकों के साथ जीने, उन्हें महसूस करने का उत्सव है। बीते तीन दशकों से, जब से सूचना प्रौद्योगिकी का प्रादुर्भाव हुआ है, मुद्रण तकनीक से जुड़े लोग इसी भय में जीते रहे हैं कि कहीं कंप्यूटर, टी.वी., सी.डी. की दुनिया छपे हुए अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध में उदरस्थ न कर ले। जैसे-जैसे चिंताएँ बढ़ी, पुस्तकों का बाजार भी बढ़ता गया। उसे बढ़ना ही था – आखिर साक्षरता दर बढ़ रही है, ज्ञान पर आधारित जीविकोपार्जन करने वालों की संख्या बढ़ रही है। पुस्तकें इंसान को वैचारिक और मानसिक दुविधाओं के प्रश्नों का विकल्प देती हैं।

असल में विश्व पुस्तक मेला सिर्फ किताब खरीदने-बेचने की जगह नहीं है। यह पुस्तक प्रेमियों की जरूरत को एक स्थान पर पूरा करने का केवल बाजार नहीं है क्योंकि केवल पुस्तक खरीदने के लिए तो दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं, जो घर बैठे किताबें पहुँचा देती हैं, बल्कि एक उत्सव है। दरअसल, पुस्तक भी इंसानी प्यार की तरह होती है, जिससे जब तक बात न करो, सामने न हो, स्पर्श न करो, अपनत्व का अहसास नहीं होता। फिर, तुलनात्मकता के लिए एक ही स्थान पर एक साथ इतने सजीव उत्पाद मिलना एक बेहतर प्रचार का विकल्प और मनोवृत्ति भी है। पुस्तक मेला एक त्योहार है, पाठकों, लेखकों, व्यापारियों, बच्चों का। हर दिन कई सौ पुस्तकों का लोकार्पण, बीस-पच्चीस गोष्ठी-विमर्श, दस-पंद्रह लेखकों से बातचीत के सत्र और बच्चों की गतिविधियाँ। ढेर सारे विचार, मतांतर एक ही छत के नीचे, पर सभी का एक ही लक्ष्य, ज्ञान को विस्तार मिले।

दिन चढ़ते ही लोग कंधे छीलती भीड़ में उचक-उचक कर लेखकों को पहचानने का प्रयास करते हैं। कहीं कविता पाठ चलता है, तो कहीं पर व्यंग्य और कहानी पेश करने का आयोजन। इस मेले की खासियत यह भी है कि दूर-दराज से आए और नए लेखक अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को तलाशते दिखते हैं। विदेशी मंडप में भले ही अधिकांश पुस्तकें केवल प्रदर्शन के लिए होती हैं, लेकिन कुछ लोग इनसे प्रेरणा प्राप्त करते भी दिखाई देते हैं। बच्चों की नैसर्गिक रचनात्मक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए बाल मंडप एक महत्त्वपूर्ण आकर्षण होता है। पुस्तक मेला में दिल और दिमाग, दोनों पुस्तक के साथ धड़कते-मचलते हैं, तभी तो यह मेला नहीं हैं, आनंदोत्सव है। पुस्तकों का वसंतोत्सव है, जो आश्वस्त करता है कि मुद्रित शब्दों की शक्ति, सहकार और सौंदर्य अब भी विद्यमान है। [10 अंक]

1(i). गद्यांश के आधार पर पुस्तकों का जीवन में महत्त्व है – [1 अंक]

(A) ज्ञान अर्जित करने के लिए

(B) रोजगार प्राप्त करने के लिए

(C) मनोरंजन प्राप्त करने के लिए

(D) वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए

सही उत्तर: (D) वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें गद्यांश में पुस्तकों को मनुष्य की वैचारिक और मानसिक दुविधाओं के प्रश्नों का विकल्प देने वाला बताया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि पुस्तकें सोच को दिशा देती हैं और मन की जिज्ञासा का समाधान करती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें ज्ञान अर्जित करना (A) पुस्तकों का एक लाभ है, पर यहाँ मानसिक और वैचारिक आवश्यकता पर विशेष बल है। रोजगार (B) बाजार बढ़ने के प्रसंग में आया है। मनोरंजन (C) को जीवन में पुस्तकों के प्रमुख महत्त्व का आधार नहीं बनाया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(ii). सूचना प्रौद्योगिकी से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना।

(B) सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

(C) सूचनाओं के आदान-प्रदान का विकास करना।

(D) सूचना क्षेत्र में संदेश, तस्वीर या विचार दूसरे स्थान पर पहुँचाना।

सही उत्तर: (B) सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें गद्यांश में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसंग में कंप्यूटर, टी.वी. और सी.डी. का उल्लेख है। ये तकनीकी साधन सूचना को प्रस्तुत करने तथा उसके आदान-प्रदान में सहायता करते हैं। अतः इस पद में सूचना के साथ तकनीक का प्रयोग निर्णायक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) केवल सूचना पहुँचाने की क्रिया बताता है और तकनीक को स्पष्ट नहीं करता। (C) सामान्य विकास की बात करता है। (D) संदेश, तस्वीर या विचार पहुँचाने का विवरण देता है, पर तकनीक का अनिवार्य तत्त्व छोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(iii). सूचना प्रौद्योगिकी के प्रादुर्भाव से किस क्षेत्र के लोगों को अधिक चिंता होने लगी ? [1 अंक]

(A) छापे खाने से जुड़े लोगों को

(B) तकनीक जगत से जुड़े लोगों को

(C) आई.टी. जगत से जुड़े लोगों को

(D) हाथ का काम करने वाले लोगों को

सही उत्तर: (A) छापे खाने से जुड़े लोगों को

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें पहले अनुच्छेद में स्पष्ट कहा गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी आने के बाद मुद्रण तकनीक से जुड़े लोग भय में जी रहे थे। उन्हें आशंका थी कि कंप्यूटर, टी.वी. और सी.डी. की चकाचौंध छपे अक्षरों का स्थान ले सकती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें छापाखाने का काम मुद्रित सामग्री तैयार करना है, इसलिए विकल्प (A) इसी वर्ग को बताता है। तकनीक जगत (B) और आई.टी. जगत (C) उस नए माध्यम से जुड़े हैं जिसकी चर्चा हुई है। हाथ से काम करने वालों (D) की चिंता का उल्लेख गद्यांश में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — छापे खाने से जुड़े लोगों को।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) पुस्तक मेले में सितारों और चित्रकारों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है।

(II) सैकड़ों पुस्तकों का लोकार्पण और लेखकों के साथ विचार-विमर्श करने का अवसर प्राप्त होता है।

(III) अलग-अलग मत के लोग एक छत के नीचे खड़े होकर चर्चा करते हैं।

(IV) पुस्तक मेले में घूमने-फिरने और मित्र बनाने का अवसर मिलता है।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (II) सही है।

(C) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

(D) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

सही उत्तर: (C) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें गद्यांश में हर दिन कई सौ पुस्तकों के लोकार्पण, गोष्ठियों और लेखकों से बातचीत के सत्रों का उल्लेख है। इसलिए कथन (II) सही है। अनेक विचार और मतांतर एक छत के नीचे होने की बात कथन (III) की भी पुष्टि करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें सितारों और चित्रकारों से मिलने का कथन (I) पाठ में नहीं दिया गया है। घूमने और मित्र बनाने को भी कथन (IV) के रूप में पाठ का समर्थन नहीं मिलता। अतः (A) और (D) गलत कथन लेते हैं तथा (B) सही कथन (III) को छोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(ix). गद्यांश में पुस्तक मेले को लेखक ने 'आनंदोत्सव' की संज्ञा दी है, क्योंकि – [1 अंक]

(A) असंख्य लोग यहाँ आकर आनंद प्राप्त करते हैं।

(B) असंख्य लेखक, विचारक, मंत्री और सितारे यहाँ मिलते हैं।

(C) यहाँ दिल और दिमाग दोनों लगते हैं।

(D) यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती हैं।

सही उत्तर: (D) यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती हैं।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें लेखक कहता है कि मेले में दिल और दिमाग दोनों पुस्तक के साथ धड़कते-मचलते हैं। पुस्तकों के प्रति अपनत्व हृदय को आनंद देता है और विचार-विमर्श तथा विविध पुस्तकें बुद्धि की जिज्ञासा शांत करती हैं। यही भावनात्मक और बौद्धिक संतुष्टि आनंदोत्सव का आधार है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) केवल लोगों के आनंद का सामान्य कथन है। (B) में मंत्री और सितारे जोड़ दिए गए हैं, जिनका आधार पाठ में नहीं है। (C) दिल और दिमाग लगने की बात तो कहता है, पर उनकी संतुष्टि का अर्थ (D) जितना स्पष्ट नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती हैं।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(v). पांडुलिपि कहते हैं – [1 अंक]

(A) हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को

(B) पाण्डवों द्वारा लिखित प्रति को

(C) नई पुस्तक की प्रति को

(D) अप्रकाशित पुस्तक की प्रति को

सही उत्तर: (A) हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें पांडुलिपि किसी रचना की हाथ से लिखी गई प्रति होती है। गद्यांश में नए लेखक अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को खोजते दिखाई देते हैं। यह प्रसंग बताता है कि लेखक अपनी रचना की प्रति प्रकाशन के लिए साथ लाए हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (B) में पाण्डवों से जोड़ना शब्द के अर्थ की गलत व्याख्या है। (C) की नई पुस्तक छपी हुई भी हो सकती है। (D) का अप्रकाशित होना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि अप्रकाशित प्रति टंकित भी हो सकती है। परिभाषा में हस्तलिखित होना निर्णायक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(vi). पुस्तक मेले में इनमें से क्या नहीं होता ? [1 अंक]

(A) कविता पाठ

(B) कहानी वाचन

(C) नई पुस्तक का प्रचार

(D) पार्टी का प्रचार

सही उत्तर: (D) पार्टी का प्रचार

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें गद्यांश में कविता पाठ, व्यंग्य और कहानी प्रस्तुत करने के आयोजन बताए गए हैं। पुस्तक लोकार्पण और एक स्थान पर अनेक पुस्तकों के मिलने को प्रचार का बेहतर विकल्प भी बताया गया है। इसलिए ये गतिविधियाँ पुस्तक मेले का हिस्सा हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें कविता पाठ (A) और कहानी वाचन (B) का आधार पाठ में सीधे मिलता है। नई पुस्तक का प्रचार (C) लोकार्पण और पुस्तकों के प्रदर्शन से जुड़ा है। किसी राजनीतिक पार्टी के प्रचार (D) का उल्लेख नहीं है। प्रश्न में निषेध होने से इसी अनुपस्थित गतिविधि को चुनना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — पार्टी का प्रचार।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(vii). गद्यांश में आई "कंप्यूटर, टी.वी., सी.डी. की दुनिया छपे हुए अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध में उदरस्थ न कर ले।" – पंक्ति का आशय है – [1 अंक]

(A) पढ़ाई से लोगों की रुचि न हटा दे।

(B) पुस्तकों का महत्त्व कम न कर दे।

(C) मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त न कर दे।

(D) मुद्रित माध्यमों को समाप्त न कर दे।

सही उत्तर: (D) मुद्रित माध्यमों को समाप्त न कर दे।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें यहाँ उदरस्थ कर लेने का अर्थ निगल जाना या पूरी तरह प्रभावहीन कर देना है। मुद्रण से जुड़े लोगों को डर था कि नए इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की आकर्षक दुनिया छपे अक्षरों की उपयोगिता और प्रतिष्ठा समाप्त कर देगी। प्रसंग पुस्तकों के भविष्य की चिंता का है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) पढ़ाई से रुचि हटने की बात करता है, जबकि चिंता छपे अक्षरों के अस्तित्व की है। (B) केवल महत्त्व कम होने तक सीमित है। (C) मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त होने की बात करता है, पर छपे अक्षरों को उदरस्थ करने का आशय मुद्रित माध्यमों को ही समाप्त कर देने की आशंका है। इस व्यापक और तीव्र अर्थ को (D) व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — मुद्रित माध्यमों को समाप्त न कर दे।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(viii). मुद्रण तकनीक से संबंध है – [1 अंक]

(A) पत्रकार का

(B) लेखक का

(C) प्रकाशक का

(D) अर्थशास्त्री का

सही उत्तर: (C) प्रकाशक का

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर का आधार लेखक का कथन और उसका प्रसंग होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे अर्थ को पाठ से मिलाना चाहिए; केवल मिलते-जुलते शब्द पर्याप्त नहीं हैं।

चरण 1: पाठ से उत्तर का आधार पहचानें मुद्रण तकनीक का संबंध रचना को छापकर पुस्तक के रूप में उपलब्ध कराने से है। गद्यांश में लेखक अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को तलाशते हैं। प्रकाशक रचना के प्रकाशन और मुद्रण की व्यवस्था करता है, इसलिए दिए विकल्पों में उसका संबंध सबसे सीधा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें पत्रकार (A) समाचार जुटाने और प्रस्तुत करने का काम करता है। लेखक (B) रचना लिखता है। दोनों की रचनाएँ छप सकती हैं, पर मुद्रण की व्यवस्था उनका मूल कार्य नहीं है। अर्थशास्त्री (D) आर्थिक विषयों का अध्ययन करता है। इस तुलना में प्रकाशक उचित चयन है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — प्रकाशक का।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को पहचानकर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से सभी विकल्पों का अर्थ मिलाएँ।

1(x). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : विश्व पुस्तक मेला सिर्फ किताब खरीदने और बेचने की जगह नहीं है।

कारण : आज किताब खरीदने-बेचने के लिए दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण का निर्णय गद्यांश के स्पष्ट आशय से किया जाता है।
- किसी आयोजन का अतिरिक्त उद्देश्य उसके साधारण व्यापारिक उद्देश्य से भिन्न पहचान बनाता है।

चरण 1: कथन की जाँच कथन सही है। लेखक पुस्तक मेले को केवल खरीदने-बेचने का बाजार न मानकर पुस्तकप्रेमियों का उत्सव कहता है। वहाँ लेखकों से बातचीत, गोष्ठियाँ और बच्चों की गतिविधियाँ भी होती हैं।

चरण 2: कारण की जाँच कारण भी सही है। गद्यांश में स्पष्ट है कि केवल पुस्तक खरीदने के लिए दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं, जो घर बैठे पुस्तकें पहुँचा देती हैं।

चरण 3: व्याख्या का संबंध कारण कथन की सही व्याख्या करता है। यदि उद्देश्य मात्र खरीदारी हो, तो वेबसाइटें उसे पूरा कर देती हैं; मेले का विशेष महत्त्व प्रत्यक्ष परिचय, स्पर्श और वैचारिक सहभागिता में है। अतः (A) और (B) के एक पक्ष को गलत कहने तथा (C)

के व्याख्यात्मक संबंध नकारने से वे असंगत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश में वेबसाइटों वाली पंक्ति पढ़ें, फिर उसके आगे आए उत्सव के अर्थ से कथन और कारण को जोड़ें।

---

2. अकेलेपन से जो लोग दुखी हैं,
वृत्तियाँ उनकी
निश्चय ही, बहिर्मुखी हैं।
सृष्टि से बाँधने वाला तार
उनका टूट गया है;
असली आनन्द का आधार
छूट गया है।
उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ ?
जड़-कटे पौधों में जीवन की धार कहाँ ?
तब भी, जड़-कटे पौधों के ही समान
रोते हैं ये उखड़े हुए लोग बेचारे;
जीना चाहते हैं भीड़-भम्भड़ के सहारे।
भीड़, मगर, टूटा हुआ तार
और तोड़ती है
कटे हुए पौधों की
जड़ नहीं जोड़ती है।
बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं;
हम अपने को उतना ही और भूलते हैं।
जड़ जमाना चाहते हो
तो एकान्त में जाओ;
अगम-अज्ञात में अपनी सोरें फैलाओ।
अकेलापन है राह
अपने आपको पाने की;
जहाँ से तुम निकल चुके हो,
उस घर में वापस जाने की। [5 अंक]

2(i). वृत्तियाँ उनकी, निश्चय ही बहिर्मुखी हैं – पंक्ति के संदर्भ में 'वृत्ति' का अर्थ है – [1 अंक]

(A) व्यापार
(B) स्वभाव
(C) कर्त्तव्य
(D) वृत्तांत

सही उत्तर: (B) स्वभाव

हल:

अवधारणा:

- शब्द का सही अर्थ उसके वाक्य और प्रसंग से चुना जाता है।
- बहिर्मुखी व्यक्ति की रुचि बाहर की दुनिया की ओर अधिक रहती है।

चरण 1: प्रसंग पहचानना कवि अकेलेपन से दुखी लोगों की मानसिक प्रवृत्ति बताता है। वे अपने भीतर झाँकने के बजाय बाहरी भीड़ और गतिविधियों पर निर्भर रहते हैं। इसलिए यहाँ बात उनके व्यवहार और स्वभाव की है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच इस संदर्भ में वृत्ति का अर्थ स्वभाव है। व्यापार किसी आर्थिक काम को, कर्त्तव्य किसी दायित्व को और वृत्तांत किसी घटना के विवरण को कहते हैं। इनमें से कोई अर्थ बहिर्मुखी होने की मानसिक विशेषता को व्यक्त नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष वृत्ति का संदर्भानुकूल अर्थ स्वभाव है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: वृत्ति के स्थान पर प्रत्येक विकल्प रखकर पढ़ें; बहिर्मुखी विशेषण के साथ स्वभाव का अर्थ सबसे सहज बैठता है।

2(ii). 'उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ ?' – पंक्ति से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) मूल से अलग होने पर नदियों में प्रवाह नहीं रहता।

(B) मूल से अलग होने पर नदियों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

(C) उद्गम स्थल से अलग होने पर नदियों में सौंदर्य नहीं रहता।

(D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता।

सही उत्तर: (D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता।

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का अभिप्राय उसके प्रतीकात्मक अर्थ और पूरे प्रसंग से समझा जाता है।
- कविता में मूल से संबंध जीवन के वास्तविक आनंद और आत्मिक सौंदर्य का आधार है।

चरण 1: नदी के बिंब का भाव समझना नदी का उद्गम उसका मूल स्रोत है। कवि इस बिंब से उन मनुष्यों की दशा व्यक्त करता है जिनका सृष्टि और अपने मूल से संबंध टूट गया है। इससे पहले वह असली आनंद का आधार छूटने की बात कहता है; इसलिए यहाँ नदी की स्थिति के माध्यम से मानव-जीवन की बात कही गई है।

चरण 2: प्रतीकात्मक आशय चुनना मूल से अलग होने पर जीवन का आनंद और सौंदर्य नहीं रहता; यही विकल्प (D) में है। (A) नदी के प्रवाह का शाब्दिक अर्थ बताता है, व्यापक अभिप्राय नहीं। (B) नदी का अस्तित्व समाप्त होने की बात करता है और (C) केवल नदी के सौंदर्य तक सीमित है। दोनों विकल्प आत्मिक आनंद से वंचित मानव-जीवन का पूरा भाव नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: अभिप्राय पूछे जाने पर नदी के शाब्दिक अर्थ से आगे बढ़ें और उसे असली आनंद का आधार छूटने की पंक्ति से जोड़ें।

2(iii). भीड़ का क्या स्वभाव है ? [1 अंक]

(A) लोगों की आलोचना करना

(B) पौधों को जड़ से काटना

(C) दुखी को और दुखी करना

(D) दूसरों का उपहास करना

सही उत्तर: (C) दुखी को और दुखी करना

हल:

अवधारणा:

- कविता में भीड़ बाहरी सहारे और आत्मविस्मृति का प्रतीक है।
- टूटा तार और कटी जड़ व्यक्ति के अपने मूल से अलग होने की स्थिति बताते हैं।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियाँ समझना कवि कहता है कि भीड़ टूटा हुआ तार और तोड़ती है तथा कटे हुए पौधों की जड़ नहीं जोड़ती। अर्थात जो व्यक्ति पहले ही अपने मूल और आत्मिक आनंद से दूर है, भीड़ उसकी स्थिति सुधार नहीं पाती।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना इसलिए भीड़ का प्रभाव दुखी को और दुखी करना है। लोगों की आलोचना और उपहास का उल्लेख इन पंक्तियों में नहीं है, अतः (A) और (D) सही नहीं हैं। (B) पौधों को सचमुच काटने का अर्थ लेता है, जबकि जड़-कटे पौधे यहाँ मनुष्य की दशा का बिंब हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भीड़ दुखी को और दुखी करती है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: भीड़ के बाद आए और तोड़ती है शब्दों पर ध्यान दें; वे दुख बढ़ने का संकेत देते हैं, दुख मिटने का नहीं।

2(iv). 'बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं' – पंक्ति में 'बाहरी तरंग' से आशय है – [1 अंक]

(A) सांसारिक माया

(B) सागर की लहरें

(C) दूसरों का सहारा

(D) भौतिक साधन

सही उत्तर: (A) सांसारिक माया

हल:

अवधारणा:

- कविता में बाहरी और भीतरी संसार के बीच संबंध और अंतर समझना आवश्यक है।
- बाहरी आकर्षणों में डूबने से मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूल सकता है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ देखना बाहरी तरंगों पर फूलने के तुरंत बाद कवि कहता है कि हम अपने को और भूलते हैं। इससे स्पष्ट है कि तरंगें समुद्र की वास्तविक लहरें नहीं, संसार के आकर्षण और उनसे मिलने वाला क्षणिक उत्साह हैं।

चरण 2: विकल्पों का विवेचन सांसारिक माया इन बाहरी आकर्षणों को व्यापक रूप में व्यक्त करती है, इसलिए (A) उपयुक्त है। (B) केवल शाब्दिक अर्थ है। (C) दूसरों के सहारे तक सीमित है और (D) केवल भौतिक वस्तुओं तक; कविता का संकेत इनसे व्यापक बाहरी मोह की ओर है।

चरण 3: निष्कर्ष बाहरी तरंग से आशय सांसारिक माया है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पंक्ति को अगली पंक्ति हम अपने को भूलते हैं के साथ पढ़ें; आत्मविस्मृति कराने वाला बाहरी मोह पहचानें।

2(v). 'जड़ जमाना चाहते हो, तो एकान्त में जाओ' – इन पंक्तियों में 'जड़ जमाना' से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) अपने आप को पहचानना

(B) अपने पाँव जमाना

(C) अपना वर्चस्व स्थापित करना

(D) बस जाना

सही उत्तर: (A) अपने आप को पहचानना

हल:

अवधारणा:

- काव्य में जड़ जमाने का अर्थ संदर्भ के अनुसार अपने मूल से जुड़ना हो सकता है।
- एकांत आत्मचिंतन और अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने का अवसर देता है।

चरण 1: अंतिम पंक्तियों से अर्थ निकालना कवि एकांत में जाने का आग्रह करता है और आगे अकेलेपन को अपने आपको पाने की राह कहता है। इस प्रकार जड़ जमाना भीतर लौटने, अपने मूल से जुड़ने और अपने आप को समझने की प्रक्रिया है।

चरण 2: अन्य अर्थों को परखना अपने आप को पहचानना इस आशय को पूरा करता है। अपने पाँव जमाना सामान्यत: स्थिति मजबूत करने को कहता है; वर्चस्व स्थापित करना दूसरों पर प्रभाव बढ़ाना है और बस जाना किसी स्थान पर रहना है। (B), (C) और (D) आत्मचिंतन के इस संदर्भ से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष जड़ जमाना का अभिप्राय अपने आप को पहचानना है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: जड़ जमाना को अलग पढ़ने के बजाय कविता की अपने आपको पाने की राह वाली पंक्ति से उसका अर्थ निश्चित करें।

3(i). यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की की खुशी को भी 'समहाउ इंप्रापर' क्यों अनुभव करते थे ? [1 अंक]

(A) बच्चों ने उन्हें आदर देना बंद कर दिया था।

(B) इससे अपनों में परायापन पैदा हो गया था।

(C) इससे बच्चों में स्वच्छंदता बढ़ गई थी।

(D) इससे बच्चों की जीवन-शैली आधुनिक हो गई थी।

सही उत्तर: (B) इससे अपनों में परायापन पैदा हो गया था।

हल:

अवधारणा:

- सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू और उनके परिवार की सोच में पीढ़ीगत अंतर दिखाई देता है।
- सुख-सुविधा बढ़ने पर भी आत्मीयता की कमी व्यक्ति को असहज कर सकती है।

चरण 1: यशोधर बाबू की स्थिति समझना यशोधर बाबू बच्चों की प्रगति के विरोधी नहीं हैं, किंतु उनकी नई जीवनदृष्टि और व्यवहार में स्वयं को सहज नहीं पाते। परिवार के अपने लोगों के बीच बढ़ती मानसिक दूरी उनकी खुशी को भी असहज बना देती है।

चरण 2: विकल्प का निर्णय अपनों में परायापन पैदा होना उनकी अनुभूति का सबसे उपयुक्त कारण है। (A) सम्मान पूर्णत: बंद होने का दावा करता है। (C) केवल स्वच्छंदता और (D) केवल आधुनिक जीवनशैली का उल्लेख करता है; ये उनके आत्मीय संबंधों में आए अलगाव को उतनी ठीक तरह व्यक्त नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों की तरक्की से अपनों में परायापन पैदा हो गया था। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: समहाउ इंप्रापर की असहजता को केवल आर्थिक उन्नति से न जोड़ें; परिवार में यशोधर बाबू की आत्मीय दूरी पहचानें।

3(ii). यशोधर बाबू की पत्नी आधुनिकाओं-सा आचरण क्यों करने लगी थी ? [1 अंक]

(A) मन में दबी इच्छाओं के कारण

(B) पारिवारिक खुशी के कारण

(C) मातृसुलभ मज़बूरी के कारण

(D) सुविधाजनक होने के कारण

सही उत्तर: (C) मातृसुलभ मज़बूरी के कारण

हल:

अवधारणा:

- माँ बच्चों की रुचियों और बदलती जीवनशैली के अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन कर सकती है।
- पात्र के व्यवहार का कारण पाठ के पारिवारिक संदर्भ से समझना चाहिए।

चरण 1: पत्नी का पारिवारिक पक्ष समझना यशोधर बाबू की पत्नी बच्चों के प्रति स्नेह और उनके साथ बने रहने की भावना से उनकी आधुनिक रुचियों को स्वीकार करती है। उसका आधुनिकाओं जैसा व्यवहार बच्चों के अनुरूप ढलने की मातृसुलभ मजबूरी से जुड़ा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच इसलिए (C) सर्वाधिक उपयुक्त है। मन में दबी इच्छाएँ उसका निर्णायक कारण नहीं हैं। पारिवारिक खुशी एक सामान्य परिणाम हो सकता है, पर माँ की विशेष प्रेरणा नहीं बताता। केवल सुविधाजनक होना भी उसके स्नेह और बच्चों से जुड़े रहने की इच्छा को स्पष्ट नहीं करता। अतः (A), (B) और (D) कम उपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू की पत्नी मातृसुलभ मज़बूरी के कारण आधुनिकाओं-सा आचरण करने लगी थी। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पत्नी के परिवर्तन को बच्चों के प्रति माँ के स्नेह से जोड़कर पढ़ें; उसके व्यवहार का केंद्रीय कारण पहचानें।

3(iii). यशोधर बाबू ने डी.डी.ए. का फ़्लैट क्यों बुक नहीं किया था ? [1 अंक]

(A) रिटायरमेंट के बाद गाँव में जाकर बसना चाहते थे।

(B) लड़कों में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

(C) फ़्लैट बुक कराने के लिए पैसे नहीं थे।

(D) योजनाबद्ध तरीके से काम नहीं करते थे।

सही उत्तर: (B) लड़कों में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

हल:

अवधारणा:

- सरकारी आवास मिलने की आशा।
- पाठ के विशिष्ट प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके उत्तर निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग को समझें यशोधर बाबू को विश्वास था कि उनके बेटों में से कोई सरकारी नौकरी में आ जाएगा। उस दशा में उसे सरकारी क्वार्टर मिल जाएगा और परिवार की आवास की समस्या हल हो जाएगी। इसी आशा के कारण उन्होंने डी.डी.ए. का फ़्लैट बुक कराने की आवश्यकता नहीं समझी।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) में गाँव बसने की इच्छा को कारण बनाया गया है, जबकि यहाँ निर्णय बेटों की भावी नौकरी की आशा से जुड़ा है। विकल्प (C) आर्थिक अभाव को कारण बताता है और (D) सामान्य अव्यवस्था को; दोनों उस विशिष्ट विश्वास को नहीं बताते जिसका प्रसंग में उल्लेख है।

चरण 3: निष्कर्ष लड़कों में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: फ़्लैट न खरीदने के कारण को बेटों की सरकारी नौकरी और उससे मिलने वाले आवास की आशा से जोड़कर याद रखें।

3(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) किशनदा ने यशोधर बाबू को नौकरी दिलवाई और जीवन में मार्गदर्शन किया।

(II) यशोधर बाबू का दैनिक खर्च नगण्य था इसलिए उनके बटुए में पैसे कम होते थे।

(III) दफ़्तर से लौटते हुए बिड़ला मंदिर जाना उन्होंने किशनदा से सीखा था।

(IV) यशोधर बाबू का मानना था काम तो सब अपने हाथ से ही ठीक रहता है।

'सिल्वर वैडिंग' कहानी के अनुसार उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (II) सही है।

(C) कथन (II) और (III) सही हैं।

(D) कथन (I), (II), (III) और (IV) सही हैं।

सही उत्तर: दिए गए विकल्पों में कोई पूर्णतः सही नहीं है।

हल:

अवधारणा:

- कथनों में व्यक्ति, घटना और उनके पारस्परिक संबंध का सटीक मिलान आवश्यक है।
- किसी कथन का एक अंश सही होने पर भी उसका पूरा आशय पाठ के अनुसार होना चाहिए।

चरण 1: कथन (I) और (II) की जाँच करें किशनदा ने यशोधर बाबू को नौकरी दिलवाई और जीवन में मार्गदर्शन दिया; इसलिए कथन (I) सही है। किंतु पाठ के अनुसार उनका दैनिक खर्च नगण्य होने पर भी वे बटुए में सौ-डेढ़ सौ रुपये हमेशा रखते थे। इसलिए कथन (II) गलत है। कम दैनिक खर्च को कम नकदी रखने का कारण बताना पाठ के विपरीत है।

चरण 2: कथन (III) और (IV) को परखें बिड़ला मंदिर जाने को पाठ में नई रीति कहा गया है, यद्यपि धार्मिक आचरण में किशनदा का आदर्श भी उनके सामने था। कथन (III) में सीखने की बात को इसी पृष्ठभूमि में देखना चाहिए। कथन (IV) स्पष्टतः सही है: नौकर रखने के प्रसंग में यशोधर बाबू ही कहते हैं कि काम सब अपने हाथ से ठीक होते हैं और नौकरों को सौंपा कारोबार चौपट होता है।

चरण 3: विकल्पों की पूर्णता जाँचें केवल कथन (I) को सही बताने वाला विकल्प (A), सही कथन (IV) को छोड़ देता है। विकल्प (B) और (C) गलत कथन (II) को सही मानते हैं। विकल्प (D) भी (II) को सही ठहराता है। इसलिए कथन (III) की व्याख्या चाहे जैसी की जाए, उपलब्ध चारों विकल्पों में कोई पूर्णतः सही उत्तर नहीं बनता।

चरण 4: निष्कर्ष कथन (I) और (IV) सही हैं तथा कथन (II) गलत है। उपलब्ध विकल्पों में कोई पूर्णतः सही नहीं है।

त्वरित सुझाव: संयुक्त कथनों में सही कथन छूटना भी विकल्प को गलत बनाता है; बटुए की राशि और नौकर रखने पर पात्र की टिप्पणी को साथ जाँचें।

3(ix). मुअनजो-दड़ो की खुदाई में मिले कोठार का उपयोग अनाज संग्रह के लिए किया जाता होगा। इस विश्वास का आधार है – [1 अंक]

(A) कोठार का वास्तुशिल्प

(B) संग्रहालय में मिले गेहूँ के दाने

(C) बैलगाड़ी के साक्ष्य

(D) पत्थर के औजार

सही उत्तर: (A) कोठार का वास्तुशिल्प

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक भवन के उपयोग का अनुमान उसके निर्माण और बनावट से लगाया जाता है।
- अनाज की खेती का प्रमाण और किसी भवन में अनाज संग्रह का प्रमाण अलग-अलग संदर्भ हैं।

चरण 1: कोठार के निर्माण की विशेषता पहचानें पाठ में विशाल कोठार के निर्माण रूप, विशेषकर चौकियों और हवादारी को देखकर वहाँ कर के रूप में मिले अनाज को जमा किए जाने का अनुमान लगाया गया है। नौ-नौ चौकियों की तीन कतारें और हवा आने-जाने की व्यवस्था उसके भंडारण संबंधी उपयोग का आधार बनती हैं।

चरण 2: अन्य साक्ष्यों का संदर्भ अलग करें ये विशेषताएँ कोठार के वास्तुशिल्प से संबंधित हैं, इसलिए विकल्प (A) सही है। संग्रहालय के गेहूँ के दाने खेती और अनाज की उपलब्धता का साक्ष्य हैं, उस कोठार के उपयोग का विशिष्ट आधार नहीं; अतः (B) गलत है। बैलगाड़ी के साक्ष्य ढुलाई से जुड़े हैं और पत्थर के औजार उपकरणों से; इसलिए (C) और (D) भी पूछे गए विश्वास का प्रत्यक्ष आधार नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कोठार का वास्तुशिल्प इस विश्वास का आधार है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कोठार के उपयोग के प्रश्न में चौकियों और हवादारी पर ध्यान दें; गेहूँ के दानों से खेती का पता चलता है, भवन का उपयोग नहीं।

3(v). "अब तू ही बता, मैं का करूँ ?" – इस कथन से आनंदा की माँ के चरित्र की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है ? [1 अंक]

(A) विवशता

(B) दुर्बलता

(C) अक्षमता

(D) परवशता

सही उत्तर: (A) विवशता

हल:

अवधारणा:

- माँ की परिस्थितिजन्य विवशता।
- पाठ के विशिष्ट प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके उत्तर निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग को समझें आनंदा की माँ बेटे की पढ़ने की इच्छा समझती है, पर पिता के कठोर व्यवहार और घर की परिस्थितियों के बीच अपने को असहाय पाती है। वह बेटे का साथ देना चाहती है, फिर भी अकेले निर्णय लागू नहीं कर सकती। इसी संकट में उसके मुख से यह प्रश्न निकलता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें यह कथन उसकी विवशता प्रकट करता है, इसलिए (A) उपयुक्त है। (B) दुर्बलता और (C) अक्षमता उसके स्वभाव या योग्यता का सामान्य मूल्यांकन बन जाते हैं, जबकि यहाँ परिस्थितियों का दबाव प्रमुख है। (D) परवशता निकट अर्थ रखते हुए भी उस असमंजस और लाचारी को उतनी सीधे व्यक्त नहीं करती जितना विवशता।

चरण 3: निष्कर्ष आनंदा की माँ की विवशता प्रकट होती है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: चरित्र के कथन को उसकी परिस्थिति से जोड़ें; माँ की सहायता करने की इच्छा और निर्णय न कर पाने की स्थिति यहाँ निर्णायक है।

3(vi). आनंदा के पिता ने उसे पाठशाला भेजने के लिए कौन-सी शर्त नहीं रखी ? [1 अंक]

(A) सुबह खेतों में पानी लगाना

(B) स्कूल से आकर ढोर चराना

(C) सुबह शाम गाय-भैंस दुहना

(D) अधिक काम होने पर स्कूल से छुट्टी लेना

सही उत्तर: (C) सुबह शाम गाय-भैंस दुहना

हल:

अवधारणा:

- निषेधात्मक प्रश्न में शर्तों की पहचान।
- पाठ के विशिष्ट प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके उत्तर निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग को समझें आनंदा के पिता चाहते थे कि उसकी पढ़ाई से खेती और पशुओं के काम प्रभावित न हों। इसलिए सुबह खेत में पानी लगाना, पाठशाला से लौटकर ढोर चराना और अधिक काम के दिन स्कूल से छुट्टी लेना जैसी शर्तें रखी गईं। ये शर्तें उसके श्रम को पहले की तरह बनाए रखने से जुड़ी थीं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें प्रश्न में उस काम को चुनना है जिसकी शर्त नहीं रखी गई थी। सुबह-शाम गाय-भैंस दुहने की शर्त इस सूची में नहीं है, इसलिए (C) सही है। विकल्प (A), (B) और (D) पिता की रखी हुई शर्तों से संबंधित हैं; उन्हें चुनने पर प्रश्न के निषेधात्मक आशय की उपेक्षा होगी।

चरण 3: निष्कर्ष सुबह-शाम गाय-भैंस दुहने की शर्त नहीं रखी गई थी। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रश्न में पहले नहीं को ध्यान में रखें और पाठ में बताई गई वास्तविक शर्तों को हटाकर बचा विकल्प चुनें।

3(vii). 'उस चक्की की अपेक्षा मास्टर की छड़ी की मार अच्छी लगती थी।' – इस वाक्य में किस चक्की की ओर संकेत किया गया है ? [1 अंक]

(A) खेती के काम की चक्की

(B) आटा पीसने की चक्की

(C) घर के काम की चक्की

(D) कोल्हू से रस निकालने की चक्की

सही उत्तर: (A) खेती के काम की चक्की

हल:

अवधारणा:

- चक्की का रूपकात्मक अर्थ।
- पाठ के विशिष्ट प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके उत्तर निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग को समझें आनंदा के लिए खेती का लगातार कठिन श्रम ऐसी चक्की था जिसमें उसका समय और पढ़ने की इच्छा पिस रहे थे। खेतों में काम का बोझ उसे शिक्षा से दूर रखता था। इसलिए पाठशाला में मास्टर की छड़ी की मार भी उसे उस जीवन की अपेक्षा स्वीकार्य लगती थी।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें यहाँ चक्की वास्तविक आटा पीसने का यंत्र नहीं, खेती के श्रम का रूपक है; अतः (A) सही है और (B) गलत है। (C) घर के सामान्य काम तक अर्थ सीमित कर देता है, जबकि प्रसंग खेती का है। (D) रस निकालने के किसी विशेष यंत्र का उल्लेख करता है, जिसका इस तुलना से संबंध नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष खेती के काम की चक्की की ओर संकेत किया गया है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ निकालते समय पात्र के मुख्य संघर्ष को देखें; आनंदा का संघर्ष खेती के श्रम के बीच पढ़ने का अवसर पाना है।

3(viii). 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के संदर्भ में निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन : देखना अपनी आँख से देखना है। बाकी सब आँख का झपकना है।
कारण : यथार्थ का अनुभव स्वयं किया जा सकता है, कहना-सुनना केवल दिखावा मात्र है। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।
(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।
(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।
(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यक्ष अनुभव का महत्त्व।
- पाठ के विशिष्ट प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके उत्तर निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें कथन में अपनी आँख से देखने को वास्तविक देखना कहा गया है। पाठ के संदर्भ में इसका आशय है कि किसी स्थान और उसके ऐतिहासिक अवशेषों का प्रत्यक्ष अनुभव विशेष महत्त्व रखता है। केवल दूसरों की बातों के सहारे वह अनुभूति पूरी तरह प्राप्त नहीं होती; इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें कारण स्वयं अनुभव करने को यथार्थ की अनुभूति का आधार बताता है। पाठ के इसी संदर्भ में कहना-सुनना प्रत्यक्ष अनुभव के सामने गौण है। इसलिए कारण सही है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध जाँचें कारण भी इसी प्रत्यक्ष अनुभव की श्रेष्ठता को व्यक्त करता है। कहना-सुनना यहाँ प्रत्यक्ष अनुभूति की तुलना में अपर्याप्त अनुभव के अर्थ में आया है; इसलिए कारण सही है। वह बताता है कि अपनी आँख से देखने पर बल क्यों दिया गया है, अतः कथन की सही व्याख्या करता है। विकल्प (A) और (B) किसी एक को गलत ठहराते हैं तथा (C) दोनों का व्याख्यात्मक संबंध नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण में पहले दोनों की सत्यता जाँचें, फिर देखें कि कारण कथन में प्रत्यक्ष देखने पर दिए बल को स्पष्ट करता है या नहीं।

3(x). 'अतीत में दबे पाँव' पाठ से उद्धृत 'रेगिस्तान के जहाज से हवा के जहाज का यह ऐतिहासिक गठजोड़ है।' – कथन का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों का प्रयोग
(B) राजस्थान तक हवाई-यात्रा का प्रबंध
(C) ऊँटगाड़े का सड़कों पर हवा की तरह दौड़ना
(D) ऊँटगाड़े में हवा वाले पहियों का प्रयोग

सही उत्तर: (A) ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों का प्रयोग

हल:

अवधारणा:

- दो जहाजों के रूपक का संबंध।
- पाठ के विशिष्ट प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके उत्तर निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग को समझें रेगिस्तान का जहाज ऊँट कहलाता है और हवा का जहाज विमान है। पाठ में इन दोनों का ऐतिहासिक गठजोड़ ऊँटगाड़े में विमान से उतारे गए पहियों के उपयोग से बनता है। इस प्रकार पुराना यातायात साधन और आधुनिक विमान का एक उपकरण एक साथ जुड़ जाते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) इसी विशेष प्रसंग को बताता है। (B) हवाई यात्रा की व्यवस्था की बात करता है, जिसका कथन में संकेत नहीं है। (C) गति को आधार बनाता है, जबकि यहाँ पहियों के पुन: उपयोग का उल्लेख है। (D) केवल हवा भरे पहियों का सामान्य अर्थ देता है और विमान से उतारे गए पहियों के विशिष्ट संबंध को छोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों के प्रयोग का संकेत है। अत: सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: दोनों जहाजों का अलग अर्थ पहचानें: ऊँट और विमान; फिर वह विकल्प चुनें जिसमें विमान के पहिए ऊँटगाड़े से जुड़ते हैं।

---

4. क्या-क्या सामान बाँध लें, जिससे मुझे वहाँ किसी प्रकार की असुविधा न हो सके। ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं, यह आश्वासन भक्तिन के लिए कोई मूल्य नहीं रखता। वह मेरे न जाने की कल्पना से इतनी प्रसन्न नहीं होती, जितनी अपने साथ न जा सकने की संभावना से अपमानित। भला ऐसा अंधेर हो सकता है। जहाँ मालिक वहाँ नौकर – मालिक को ले जाकर बंद कर देने में इतना अन्याय नहीं; पर नौकर को अकेले मुक्त छोड़ देने में पहाड़ के बराबर अन्याय है। ऐसा अन्याय होने पर भक्तिन को बड़े लाट तक लड़ना पड़ेगा। किसी की माई यदि बड़े लाट तक नहीं लड़ी, तो नहीं लड़ी; पर भक्तिन का तो बिना लड़े काम ही नहीं चल सकता। [5 अंक]

4(i). 'ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं।' पंक्ति में प्रयुक्त 'ऐसी यात्रा' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) तीर्थ यात्रा

(B) जेल यात्रा

(C) अंतिम यात्रा

(D) विदेश यात्रा

सही उत्तर: (B) जेल यात्रा

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में यात्रा का अर्थ उसके आसपास दिए गए संकेतों से निर्धारित होता है।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें ले जाकर बंद कर देने और नौकर को अकेले मुक्त छोड़ने की चर्चा जेल जाने का संकेत देती है। भक्तिन कारावास में भी लेखिका के साथ रहकर सेवा करना चाहती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें तीर्थ यात्रा में धार्मिक उद्देश्य, अंतिम यात्रा में मृत्यु और विदेश यात्रा में दूसरे देश का संदर्भ अपेक्षित होता; यहाँ इनमें से कोई संकेत नहीं है। बंद किए जाने और साथ जाने का अधिकार न होने के कारण विकल्प (B) ही प्रसंगानुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ ऐसी यात्रा से अभिप्राय जेल यात्रा है। अत: सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: यात्रा का प्रकार पहचानने के लिए बंद करने और मुक्त छोड़ने जैसे निकटवर्ती शब्द देखें।

4(ii). भक्तिन किस बात को अपने लिए अपमान समझती थी ? [1 अंक]

(A) पाक कला में मीन-मेख निकालने को

(B) महादेवी जी की आज्ञा का पालन न करने को

(C) उनकी पसंद का खाना न बना सकने की बात को

(D) कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देने को

सही उत्तर: (D) कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देने को

हल:

अवधारणा:

- पात्र की भावना पहचानते समय उसी स्थिति को आधार बनाएँ जिसका गद्यांश में प्रत्यक्ष उल्लेख है।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें लेखिका कहती हैं कि भक्तिन अपने साथ न जा सकने की संभावना से अपमानित अनुभव करती है। वह अपने सेवा संबंध को इतना गहरा मानती है कि विपत्ति में लेखिका को अकेला छोड़ना उसे स्वीकार नहीं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें पाककला में दोष निकालने, आज्ञा न मानने और पसंद का भोजन न बना पाने का यहाँ उल्लेख नहीं है। विकल्प (A), (B) और (C) भोजन या आज्ञापालन की अलग स्थितियाँ बताते हैं; विकल्प (D) कठिन परिस्थिति में साथ न रह पाने की वास्तविक पीड़ा व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देने को अपना अपमान समझती थी। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पात्र की भावना के प्रश्न में अपनी सामान्य जानकारी से पहले गद्यांश का सीधा कथन खोजें।

4(iii). गद्यांश के संदर्भ में 'अंधेर होना' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) अंधकार होना

(B) बेईमानी होना

(C) अपमान होना

(D) अन्याय होना

सही उत्तर: (D) अन्याय होना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ शब्दों के शाब्दिक अर्थ से अलग हो सकता है; उसका निर्णय प्रसंग करता है।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें अंधेर कहने के तुरंत बाद भक्तिन मालिक को बंद करने और नौकर को मुक्त छोड़ने की असंगति पर विचार करती है। आगे इसी स्थिति को पहाड़ के बराबर अन्याय कहा गया है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें इसलिए अंधेर का अर्थ अंधकार नहीं है। यहाँ किसी आर्थिक छल या बेईमानी का वर्णन भी नहीं है। अपमान भक्तिन की निजी अनुभूति अवश्य है, किंतु जिस व्यवस्था को वह अंधेर कहती है, उसका सटीक अर्थ अन्याय है। इस कारण (A), (B), (C) की अपेक्षा (D) उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में अंधेर होना का अर्थ अन्याय होना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मुहावरे के बाद आने वाली व्याख्या देखें; यहाँ अन्याय शब्द स्वयं उसका अर्थ स्पष्ट करता है।

4(iv). 'क्या-क्या ..... असुविधा न हो सके।' – इस वाक्य से महादेवी जी के प्रति भक्तिन की किस भावना का पता चलता है ? [1 अंक]

(A) निष्ठा और कर्तव्यपरायणता

(B) दृढ़ता और धर्मपरायणता

(C) आत्मीयता और भावुकता

(D) सेवा और तत्परता

सही उत्तर: (D) सेवा और तत्परता

हल:

अवधारणा:

- विशेष वाक्य के आशय का निर्णय उसमें व्यक्त काम और उद्देश्य से होता है।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें क्या-क्या सामान बाँध लें में यात्रा की तैयारी और असुविधा न हो सके में लेखिका की सुविधा का ध्यान है। भक्तिन आवश्यक सामान जुटाकर सेवा करने के लिए तत्काल तैयार है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें निष्ठा तथा आत्मीयता उसके व्यापक चरित्र में हैं, पर इस वाक्य का सीधा जोर सामान बाँधने और सुविधा सुनिश्चित करने पर है। धर्मपालन का कोई उल्लेख नहीं और भावुकता की अपेक्षा व्यावहारिक तैयारी प्रमुख है। अतः (A), (B), (C) की तुलना में सेवा और तत्परता वाला (D) अधिक सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य से भक्तिन की सेवा और तत्परता की भावना प्रकट होती है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: विशेष वाक्य का भाव चुनते समय उसकी क्रिया देखें: सामान बाँधना व्यावहारिक सेवा की तैयारी है।

4(v). भक्तिन बड़े लाट साहब से भी लड़ने को क्यों तैयार है ? [1 अंक]

(A) महादेवी जी को जेल भेजने का आदेश देने के कारण

(B) छोटे-छोटे लड़को को जेल में डालने के कारण

(C) स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डालने के कारण

(D) महादेवी जी को जेल में डालने और उसे मुक्त छोड़ने के कारण

सही उत्तर: (D) महादेवी जी को जेल में डालने और उसे मुक्त छोड़ने के कारण

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के विरोध का कारण उसके अपने कथन और तर्क से स्पष्ट होता है।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें भक्तिन का तर्क है कि जहाँ मालिक है वहीं नौकर को भी रहना चाहिए। महादेवी जी को जेल में बंद करना और उसे बाहर अकेला छोड़ना उसे असह्य अन्याय लगता है; इसी के विरोध में वह बड़े लाट तक लड़ने को तैयार है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) केवल महादेवी जी को जेल भेजने का उल्लेख करता है और भक्तिन को अलग रखने वाला निर्णायक पक्ष छोड़ देता है। छोटे लड़कों या अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डालने की बात इस अंश में नहीं है, इसलिए (B) और (C) भी उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष महादेवी जी को जेल में डालने और भक्तिन को मुक्त छोड़ने के कारण वह बड़े लाट से लड़ने को तैयार है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कारण वाले विकल्प में पूरी वजह देखें; यहाँ जेल भेजने के साथ भक्तिन को अलग रखना भी आवश्यक है।

5. उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।। [5 अंक]

5(i). 'बोले बचन मनुज अनुसारी' का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) मनुष्य द्वारा बोले जाने योग्य वचन
(B) मनुष्य द्वारा अनुसरण करने योग्य वचन
(C) मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन
(D) मानव सुलभ गुणों से युक्त वचन

सही उत्तर: (C) मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन

हल:

अवधारणा:

- काव्य में प्रयुक्त पद का आशय उसके भाव और पात्र की परिस्थिति से समझा जाता है।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें मनुज का अर्थ मनुष्य और अनुसारी का अर्थ अनुरूप है। मूर्च्छित लक्ष्मण को देखकर राम एक दुखी मनुष्य की तरह व्याकुल वचन बोलते हैं; उनका भ्रातृस्नेह मानवीय शोक के रूप में व्यक्त होता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) बोलने की योग्यता और (B) दूसरों के अनुसरण की योग्यता बताते हैं, जो अनुसारी का यहाँ अर्थ नहीं है। (D) सामान्य मानवीय गुणों की बात करता है, जबकि (C) मानव प्रकृति के अनुरूप वचन कहकर इस पद का सीधा और सटीक अर्थ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष बोले बचन मनुज अनुसारी का अर्थ मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन बोलना है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अनुसारी का अर्थ यहाँ अनुसरण करने योग्य नहीं, बल्कि अनुरूप है; इसी भेद से विकल्प चुनें।

5(ii). 'सकहु न दुखित ..... मृदुल सुभाऊ' चौपाई के आधार पर लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ हैं – [1 अंक]

(A) स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी
(B) मृदुल, आज्ञाकारी, कोमलचित्त
(C) कोमल, स्नेही, आज्ञाकारी
(D) कोमल, उदार, सहनशील

सही उत्तर: (A) स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की विशेषताएँ उन्हीं शब्दों और व्यवहार से चुनें जिन्हें उद्धृत पंक्ति प्रमाणित करती है।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें राम कहते हैं कि लक्ष्मण उन्हें कभी दुखी नहीं देख सकते और उनका स्वभाव सदा मृदुल रहा है। इससे लक्ष्मण की कोमलता, स्नेहशीलता और विशेष रूप से भाई के प्रति प्रेम प्रकट होता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) में स्नेही, मृदुल और भ्रातृप्रेमी तीनों गुण इसी कथन से पुष्ट होते हैं। (B) और (C) में

आज्ञाकारिता है, पर इस चौपाई में किसी आज्ञा के पालन का उल्लेख नहीं। (D) में उदारता और सहनशीलता हैं, जिन्हें यह अंश सीधे व्यक्त नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष इस चौपाई में लक्ष्मण स्नेही, मृदुल और भ्रातृप्रेमी दिखाई देते हैं। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पूरे चरित्र की प्रसिद्ध विशेषताओं के बजाय उद्धृत चौपाई से सिद्ध होने वाले गुण चुनें।

5(iii). 'सो अनुराग कहाँ अब भाई' पंक्ति द्वारा राम लक्ष्मण के हृदय में विद्यमान किस भाव की ओर संकेत कर रहे हैं ? [1 अंक]

(A) बड़े भाई को कभी दुखी न देखने का भाव
(B) सबके प्रति हृदय में विद्यमान कोमलता का भाव
(C) बड़े भाई के प्रति कर्तव्यपालन का भाव
(D) बड़े भाई के प्रति त्याग युक्त प्रेम का भाव

सही उत्तर: (D) बड़े भाई के प्रति त्याग युक्त प्रेम का भाव

हल:

अवधारणा:

- अनुराग का स्वरूप समझने के लिए उससे पहले वर्णित कार्यों को उसके प्रमाण के रूप में पढ़ना चाहिए।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें राम लक्ष्मण को याद दिलाते हैं कि उन्होंने उनके हित में माता-पिता को छोड़ दिया तथा वन की सर्दी, धूप और हवा के कष्ट सहे। सो अनुराग उसी आत्मत्याग से भरे भाई के प्रेम की ओर संकेत करता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) दुख न देख सकने की एक अभिव्यक्ति तक सीमित है। (B) सबके प्रति कोमलता कहता है, जबकि यहाँ विशेष रूप से राम के प्रति प्रेम है। (C) कर्तव्य को प्रमुख करता है, पर माता-पिता का त्याग और वनकष्ट सहना जिस अगाध अनुराग से उपजे हैं, उसे (D) अधिक पूर्ण रूप में बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष राम बड़े भाई के प्रति लक्ष्मण के त्यागयुक्त प्रेम की ओर संकेत कर रहे हैं। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: सो जैसे संकेतवाचक शब्द का आशय जानने के लिए ठीक पहले बताई गई घटनाएँ पढ़ें।

5(iv). लक्ष्मण के हृदय में राम के प्रति अगाध प्रेम को व्यक्त करने वाली पंक्ति है – [1 अंक]

(A) अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ .....
(B) सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा .....
(C) मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन .....
(D) सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि .....

सही उत्तर: (C) मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन .....

हल:

अवधारणा:

- अगाध प्रेम का सबसे स्पष्ट प्रमाण वह कर्म है जिसमें प्रिय व्यक्ति के लिए अपना सुख छोड़ा जाए।
- विकल्प का चयन उद्धृत अंश के स्पष्ट संकेतों और प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अंश का अर्थ समझें मम हित लागि तजेहु पितु माता में लक्ष्मण द्वारा राम के लिए माता-पिता को छोड़ने का वर्णन है। सहेहु

बिपिन हिम आतप बाता में उसी प्रेम के कारण वन की सर्दी, धूप और हवा के कष्ट सहने का उल्लेख है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) में राम का लक्ष्मण को हृदय से लगाना है, इसलिए वह राम का प्रेम दिखाता है। (B) लक्ष्मण का कोमल स्वभाव और (D) राम का व्याकुल प्रश्न व्यक्त करता है। (C) लक्ष्मण के किए हुए त्याग को सीधे बताता है, इसलिए उनके अगाध प्रेम का सबसे ठोस प्रमाण यही है।

चरण 3: निष्कर्ष मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता। पंक्ति लक्ष्मण का अगाध प्रेम व्यक्त करती है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: किसके प्रेम का प्रश्न है, पहले यह पहचानें; फिर उसी पात्र द्वारा किए गए त्याग वाली पंक्ति चुनें।

5(v). काव्यांश का केंद्रीय भाव है – [1 अंक]

(A) लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना

(B) दुख की स्थिति के प्रभाव का वर्णन करना

(C) राम के निर्मल और उदात्त चरित्र का वर्णन करना

(D) लक्ष्मण द्वारा राम के लिए किए गए त्याग का वर्णन करना

सही उत्तर: (A) लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव वह मुख्य अनुभूति है जो पूरे काव्यांश में निरंतर व्यक्त होती है।
- यहाँ लक्ष्मण की मूर्च्छा देखकर राम का भ्रातृप्रेम और शोक मुखर हुआ है।

चरण 1: राम की मनःस्थिति पहचानिए आधी रात बीतने पर भी हनुमान नहीं लौटे हैं। राम लक्ष्मण को हृदय से लगाकर उनके कोमल स्वभाव और अपने लिए किए गए त्याग को याद करते हैं। वे व्याकुल होकर भाई से उठने का आग्रह करते हैं। यह पूरा प्रसंग उनके विलाप को सामने लाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा समझिए (B) दुख के प्रभाव का सामान्य कथन है; इसमें राम और लक्ष्मण का विशिष्ट प्रसंग नहीं आता। (C) राम के उदात्त चरित्र का व्यापक वर्णन है, जबकि यहाँ उनका शोक प्रमुख है। (D) में लक्ष्मण का त्याग केवल एक सहायक प्रसंग है; पूरे काव्यांश का मुख्य विषय नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है—लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय पूरे अंश की प्रमुख अनुभूति देखें, किसी एक पंक्ति का आशय नहीं।

6(i). रमेश को हिन्दी भाषा के शब्दों को समझने में कठिनाई का अनुभव होता है इसीलिए संचार के निम्नलिखित माध्यमों में से उसके लिए कौन-सा माध्यम उपयुक्त रहेगा ? [1 अंक]

(A) टी.वी.

(B) समाचार-पत्र

(C) रेडियो

(D) सिनेमा

सही उत्तर: (B) समाचार-पत्र

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में पाठक अपनी गति से पढ़ सकता है और कठिन शब्दों को बार-बार देख सकता है।
- समाचार-पत्र पढ़ते समय शब्दकोश या किसी जानकार की सहायता लेकर शब्दार्थ समझना संभव है।

चरण 1: रमेश की कठिनाई पर ध्यान दीजिए रमेश को हिन्दी भाषा के शब्द समझने में कठिनाई है। समाचार-पत्र का पाठ स्थिर रहता है; वह पढ़ने की गति धीमी कर सकता है, कठिन शब्द दोबारा पढ़ सकता है और उनका अर्थ खोज सकता है। इस सुविधा के कारण समाचार-पत्र उसके लिए उपयुक्त माध्यम है।

चरण 2: अन्य माध्यमों की तुलना कीजिए (A) टी.वी. में दृश्य मदद कर सकते हैं, पर प्रसारित शब्द तेजी से आगे बढ़ते हैं। (C) रेडियो में केवल ध्वनि होती है और कठिन शब्द समझने के लिए प्रसारण अपने-आप नहीं रुकता। (D) सिनेमा में भी संवाद और दृश्य निर्धारित गति से चलते हैं। इन माध्यमों की तुलना में समाचार-पत्र कठिन शब्द पर रुककर विचार करने तथा उसे फिर पढ़ने का अवसर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है—समाचार-पत्र।

त्वरित सुझाव: कठिन शब्द समझने के लिए बार-बार पढ़ने और अपनी गति चुनने की सुविधा देखें; यह मुद्रित माध्यम में मिलती है।

6(ii). टी.वी. पर एंकर द्वारा रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर सूचनाएँ देना कहलाता है – [1 अंक]

(A) ब्रेकिंग न्यूज

(B) ड्राई एंकर

(C) लाइव

(D) एंकर पैकेज

सही उत्तर: (B) ड्राई एंकर

हल:

अवधारणा:

- ड्राई एंकर में समाचार-वाचक रिपोर्टर से प्राप्त जानकारी के आधार पर सूचना प्रस्तुत करता है।
- समाचार की प्रस्तुति का नाम उसकी तात्कालिकता से ही नहीं, प्रस्तुत करने के ढंग से तय होता है।

चरण 1: प्रस्तुति की प्रक्रिया पहचानिए प्रश्न में एंकर रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर दर्शकों को सूचना दे रहा है। इस प्रकार समाचार पहुँचाने की विधि ड्राई एंकर कहलाती है। यहाँ एंकर द्वारा जानकारी का वाचन प्रमुख है; रिपोर्टर की मौके से सीधी प्रस्तुति का उल्लेख नहीं है।

चरण 2: शेष विकल्प जाँचिए (A) ब्रेकिंग न्यूज किसी बड़ी या तत्काल मिली खबर की सूचना है। (C) लाइव में घटनास्थल से सीधा प्रसारण होता है। (D) एंकर पैकेज में खबर को संबंधित दृश्यों, ध्वनियों और अन्य सामग्री सहित अधिक समग्र रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए ये तीनों प्रश्न में दी गई प्रक्रिया के ठीक नाम नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है—ड्राई एंकर।

त्वरित सुझाव: रिपोर्टर से मिली सूचना को एंकर बताए तो ड्राई एंकर; घटनास्थल से सीधा प्रसारण हो तो लाइव पहचानें।

6(iii). किसी भी क्षेत्र में हो रहे भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए तैयार की गई रिपोर्ट कहलाएगी – [1 अंक]

(A) खोजी रिपोर्ट

(B) इन-डेप्थ रिपोर्ट

(C) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट

(D) विवरणात्मक रिपोर्ट

सही उत्तर: (A) खोजी रिपोर्ट

हल:

अवधारणा:

- खोजी रिपोर्ट दबे या छिपाए गए तथ्यों की पड़ताल करके सार्वजनिक हित में उन्हें उजागर करती है।
- भ्रष्टाचार और अनियमितताओं का पर्दाफाश खोजी पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य है।

चरण 1: रिपोर्ट का उद्देश्य पहचानिए प्रश्न में किसी क्षेत्र की गड़बड़ियों और भ्रष्टाचार को उजागर करने की बात है। ऐसी सूचना सामान्यतः सामने उपलब्ध नहीं होती; पत्रकार तथ्य, प्रमाण और संबंधित स्रोतों की पड़ताल करके वास्तविकता सामने लाता है। यह खोजी रिपोर्ट की विशेष पहचान है।

चरण 2: अन्य विकल्प अलग कीजिए (B) इन-डेप्थ रिपोर्ट किसी विषय की विस्तृत और गहरी पड़ताल करती है, पर उसमें भ्रष्टाचार का पर्दाफाश अनिवार्य नहीं है। (C) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तथ्यों के कारणों, संबंधों और प्रभावों की व्याख्या करती है। (D) विवरणात्मक रिपोर्ट घटना का विस्तार से विवरण देती है। यहाँ विशिष्ट लक्ष्य छिपी गड़बड़ी को उजागर करना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है—खोजी रिपोर्ट।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट का नाम चुनते समय उद्देश्य देखें: छिपा भ्रष्टाचार उजागर करना खोजी रिपोर्ट की पहचान है।

6(iv). उलटा पिरामिड शैली की लोकप्रियता के संदर्भ में कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं, उचित विकल्प चुनकर लिखिए :

(I) समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है।

(II) इस शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना पिरामिड के निचले हिस्से में होती है।

(III) लेखन और संपादन की सुविधा के कारण यह समाचार लेखन की मानक शैली है।

(IV) इस शैली का आरम्भ द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुआ। [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (IV) सही है।

(C) कथन (I) और (III) सही हैं।

(D) कथन (I) और (II) सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन (I) और (III) सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- उलटा पिरामिड शैली में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूचना आरंभ में और कम महत्त्वपूर्ण विवरण बाद में आते हैं।
- यह क्रम लेखन, संक्षेपण और संपादन को सुविधाजनक बनाता है।

चरण 1: पहले तीन कथनों की जाँच कीजिए कथन (I) सही है क्योंकि उलटा पिरामिड समाचार लेखन की लोकप्रिय और बुनियादी शैली

है। कथन (II) गलत है: सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य निचले हिस्से में नहीं, समाचार के आरंभ में रखा जाता है। कथन (III) सही है क्योंकि संपादक अंत के कम जरूरी विवरण हटाकर भी मूल सूचना सुरक्षित रख सकता है।

चरण 2: चौथे कथन और विकल्पों की जाँच कीजिए कथन (IV) गलत है। इस शैली का विकास द्वितीय विश्व युद्ध में नहीं, अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान समाचार भेजने की परिस्थितियों से जुड़ा है। अतः केवल (I) या केवल (IV) वाला विकल्प अधूरा अथवा गलत है। (I) और (II) का युग्म भी गलत है क्योंकि (II) असत्य है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है—कथन (I) और (III) सही हैं।

त्वरित सुझाव: उलटा पिरामिड याद रखने के लिए क्रम बनाएँ: सबसे जरूरी तथ्य पहले, कम जरूरी विवरण बाद में।

6(v). दृश्यों के साथ खबर लिखने की बुनियादी शर्त किस माध्यम में है ? [1 अंक]

(A) समाचार-पत्र

(B) टेलीविजन

(C) रेडियो

(D) इंटरनेट

सही उत्तर: (B) टेलीविजन

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यम है, इसलिए समाचार की भाषा और दृश्य परस्पर पूरक होने चाहिए।
- दृश्य जिस सूचना को दिखा रहे हों, लिखी गई खबर उसी से संगत रहनी चाहिए।

चरण 1: दृश्यों की भूमिका पहचानिए टेलीविजन पर दर्शक खबर को सुनने के साथ उससे जुड़े दृश्य देखता है। इसलिए खबर लिखते समय उपलब्ध दृश्यों को ध्यान में रखना बुनियादी शर्त है। शब्द चित्रों का आशय स्पष्ट करते हैं और आवश्यक संदर्भ जोड़ते हैं, ताकि दृश्य और कथन मिलकर एक ही सूचना दें।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर कीजिए (A) समाचार-पत्र में खबर मुख्यतः लिखित पाठ है; हर खबर के साथ चित्र अनिवार्य नहीं। (C) रेडियो केवल श्रव्य माध्यम है, इसलिए उसमें दिखते दृश्यों के साथ लिखने का प्रश्न नहीं उठता। (D) इंटरनेट पर पाठ, ध्वनि और वीडियो सभी हो सकते हैं; हर खबर में दृश्य अनिवार्य नहीं। यह शर्त विशेष रूप से टेलीविजन समाचार की है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है—टेलीविजन।

त्वरित सुझाव: दृश्यों के साथ खबर लिखने की शर्त को टेलीविजन की दृश्य-श्रव्य प्रकृति से जोड़कर याद रखें।

7(क). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :

समाचार पत्र-पत्रिका के संदर्भ में लेख से क्या तात्पर्य है ? लेख लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र या पत्रिका का लेख किसी विषय का तथ्यपूर्ण, क्रमबद्ध और विचारपूर्ण विवेचन प्रस्तुत करता है।
- परिभाषा के साथ विषयवस्तु, भाषा, संगठन तथा तथ्य-जाँच की सावधानियाँ बताना आवश्यक है।

चरण 1: उत्तर की विषयवस्तु और क्रम तय कीजिए पहले लेख का अर्थ स्पष्ट करें कि वह केवल घटना की सूचना नहीं देता, बल्कि चुने हुए विषय को विस्तार और तर्क के साथ समझाता है। उसके बाद उपयुक्त शीर्षक, विषय का ज्ञान, प्रमाणिक तथ्य, क्रमबद्ध प्रस्तुति तथा

पाठक के अनुकूल भाषा की आवश्यकता लिखें। प्रश्न लेख की परिभाषा और सावधानियाँ पूछता है, इसलिए किसी अलग विषय पर पूरा लेख लिखना अपेक्षित नहीं है। सावधानियों को अलग-अलग सूत्रों में जोड़ने के बजाय उनका प्रयोजन समझना उपयोगी है: प्रमाणिक तथ्य विश्वसनीयता बढ़ाते हैं, अनुच्छेदों का तारतम्य विचार स्पष्ट करता है और सहज भाषा पाठक की रुचि बनाए रखती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में नमूना उत्तर समाचार-पत्र या पत्रिका में किसी विषय का तथ्यपूर्ण, क्रमबद्ध और विचारपूर्ण विवेचन लेख कहलाता है। लेख लिखते समय विषय का पर्याप्त अध्ययन, तथ्यों की प्रामाणिकता, आकर्षक शीर्षक तथा स्पष्ट उद्देश्य का ध्यान रखना चाहिए। भूमिका, विषय-विस्तार और निष्कर्ष में तारतम्य हो। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और पाठक के अनुकूल हो। अनावश्यक विस्तार, पुनरुक्ति तथा निराधार कथनों से बचना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लेख की पहचान विचारपूर्ण विवेचन है; उसका प्रभाव प्रामाणिक तथ्यों, सुसंगठित प्रस्तुति और सहज भाषा पर निर्भर करता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद चार सूत्र याद रखें: तथ्य, शीर्षक, क्रम और सरल भाषा; उत्तर विषय पर केंद्रित रहेगा।

7(ख). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :

पत्रकारीय लेखन का संबंध किससे है और यह साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन से अलग कैसे है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन का संबंध समाचार माध्यमों के लिए सार्वजनिक महत्त्व की घटनाओं, समस्याओं और विचारों के तथ्यपरक प्रस्तुतीकरण से है।
- पत्रकार का उत्तरदायित्व सत्यापन, प्रामाणिकता और जनहित है; साहित्यिक रचना में कल्पना और निजी अनुभूति को अधिक स्वतंत्रता मिलती है।

चरण 1: संबंध स्पष्ट करना इस प्रश्न में पहले लेखन के कार्यक्षेत्र को बताना है। समाचारपत्र, पत्रिका तथा अन्य समाचार माध्यम जनता तक समसामयिक सूचना पहुँचाते हैं। पत्रकार घटना की जाँच करता है और विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी जुटाता है। इसलिए पत्रकारिता का आधार सत्यापित तथ्य हैं। जनहित उसकी विषयवस्तु और प्रस्तुति को दिशा देता है।

चरण 2: साहित्यिक लेखन से अंतर समझना तुलना का आधार कल्पना की भूमिका और अभिव्यक्ति का उद्देश्य है। साहित्य में लेखक काल्पनिक पात्र, घटनाएँ और कलात्मक भाषा अपना सकता है। पत्रकार किसी समाचार में अपनी कल्पना से घटना नहीं जोड़ सकता। उसे स्पष्ट और पाठक के अनुकूल भाषा में विश्वसनीय सूचना देनी होती है। साहित्य भी यथार्थ से जुड़ता है, इसलिए उसे केवल कल्पना कहना ठीक नहीं होगा।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पत्रकारीय लेखन का संबंध जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार, सूचना और विचार प्रस्तुत करने से है। इसका आधार समसामयिक घटनाएँ, सत्यापित तथ्य और जनहित होते हैं। साहित्यिक तथा सृजनात्मक लेखन में कल्पना, अनुभूति और कलात्मक अभिव्यक्ति को स्वतंत्रता मिलती है, जबकि पत्रकारिता में तथ्य गढ़े नहीं जा सकते। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और प्रस्तुति प्रामाणिक होनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष पत्रकारीय लेखन में जनहितकारी तथ्य और उनकी विश्वसनीयता प्रधान हैं; साहित्यिक लेखन में अनुभूति और कल्पना की स्वतंत्रता अधिक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले पत्रकारिता का कार्यक्षेत्र लिखें, फिर तथ्य और कल्पना की भूमिका के आधार पर अंतर स्पष्ट करें।

7(ग). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :

मीडिया की भाषा में 'बीट' किसे कहते हैं ? बीट रिपोर्टर बनने के लिए एक पत्रकार में क्या योग्यता होनी चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-संकलन के लिए किसी संवाददाता को सौंपा गया निश्चित क्षेत्र या विषय उसकी बीट कहलाता है।
- बीट रिपोर्टिंग में विषय की जानकारी, विश्वसनीय संपर्क और नियमित घटनाक्रम पर निगाह आवश्यक हैं।

चरण 1: बीट का अर्थ पहचानना समाचार संस्थान काम को अलग-अलग क्षेत्रों में बाँटते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, अपराध, राजनीति और खेल ऐसे क्षेत्र हो सकते हैं। किसी रिपोर्टर को इनमें से जो निश्चित विषय या क्षेत्र नियमित समाचार-संकलन के लिए दिया जाता है, वही उसकी बीट है। यह किसी एक समाचार का नाम नहीं, बल्कि उसके नियमित कार्यक्षेत्र का नाम है।

चरण 2: पत्रकार की योग्यताएँ समझना बीट रिपोर्टर को अपने विषय की बुनियादी जानकारी और उससे संबंधित संस्थाओं की कार्यप्रणाली समझनी चाहिए। पुराने घटनाक्रम से परिचय उसे नए समाचार का संदर्भ बताने में मदद करता है। विश्वसनीय सूत्रों का संपर्क-जाल उपयोगी है, पर उनकी बात की जाँच भी आवश्यक है। जिज्ञासा, सतर्कता और निष्पक्षता के बिना संपर्क पर्याप्त नहीं होते।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर मीडिया की भाषा में समाचार-संकलन के लिए पत्रकार को सौंपा गया निश्चित विषय या क्षेत्र बीट कहलाता है; जैसे शिक्षा, अपराध या राजनीति। बीट रिपोर्टर को संबंधित क्षेत्र का ज्ञान, उसकी संस्थाओं और कार्यप्रणाली की समझ तथा नवीन घटनाक्रम की जानकारी होनी चाहिए। उसमें विश्वसनीय सूत्र विकसित करने, तथ्य जाँचने, निष्पक्ष रहने और समाचार पहचानने की क्षमता भी आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष बीट निश्चित कार्यक्षेत्र है और सफल बीट रिपोर्टर की पहचान विषयज्ञान, सतर्कता, संपर्क तथा तथ्यपरक दृष्टि है।

त्वरित सुझाव: बीट की परिभाषा के साथ एक उदाहरण दें और योग्यता में विषयज्ञान, संपर्क तथा तथ्य-जाँच अवश्य जोड़ें।

8(i)(a). मुद्रित माध्यमों में पढ़ी हुई कहानी की तुलना में दृश्य माध्यम पर देखी गई कहानी को लोग देर तक क्यों याद रखते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृश्य माध्यम में कहानी चित्र, ध्वनि, संवाद और अभिनय के संयुक्त प्रभाव से प्रस्तुत होती है।
- स्मरण का कारण केवल घटना नहीं, उससे जुड़ी दृश्य और श्रव्य अनुभूतियों का प्रभाव भी है।

चरण 1: दोनों माध्यमों की प्रस्तुति समझना मुद्रित कहानी में पाठक शब्द पढ़कर पात्रों, स्थानों और घटनाओं की कल्पना करता है। दृश्य माध्यम में पात्रों के चेहरे, हावभाव, गतिविधियाँ और परिवेश प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। संवाद, स्वर तथा अन्य ध्वनियाँ इन दृश्यों के साथ जुड़ती हैं। इससे कहानी के प्रसंगों का ठोस रूप सामने आता है।

चरण 2: स्मरण का कारण बताना दृश्य और श्रव्य संकेत मिलकर ध्यान खींचते हैं तथा भावनात्मक प्रभाव पैदा करते हैं। बाद में किसी पात्र का चेहरा या संवाद याद आते ही संबंधित घटना भी स्मृति में उभर सकती है। इसलिए प्रश्न में अपेक्षित उत्तर में चित्र और ध्वनि के संयुक्त प्रभाव को मुख्य कारण बनाना चाहिए।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर दृश्य माध्यम में कहानी चित्र, ध्वनि, संवाद, अभिनय और हावभाव के साथ सामने आती है। दर्शक घटनाओं को एक साथ देखता और सुनता है। पात्रों तथा परिस्थितियों का जीवंत और भावनात्मक प्रभाव पड़ता है। अनेक दृश्य-श्रव्य संकेत स्मृति से जुड़ जाने के कारण देखी गई कहानी देर तक याद रहती है।

चरण 4: निष्कर्ष चित्र और ध्वनि की संयुक्त, जीवंत प्रस्तुति कहानी को अधिक प्रभावशाली और स्मरणीय बनाती है।

त्वरित सुझाव: केवल रंगीन चित्रों का उल्लेख न करें; देखने, सुनने और भावनात्मक प्रभाव के संयुक्त संबंध को स्पष्ट करें।

अथवा

8(i)(b). "कैमरे में बंद अपाहिज" कविता के आधार पर शारीरिक चुनौती झेलने वाले व्यक्ति और दूरदर्शन कर्मी के बीच हुए संवाद के दृश्य को लगभग 40 शब्दों में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में दूरदर्शन द्वारा पीड़ा को तमाशा बनाने की संवेदनहीन प्रवृत्ति पर व्यंग्य है।
- दृश्य में प्रश्नकर्ता का दबाव और शारीरिक चुनौती झेलते व्यक्ति की असहजता मुख्य हैं।

चरण 1: संवाद की परिस्थिति पहचानना दूरदर्शन कर्मी साक्षात्कार के लिए शारीरिक चुनौती झेलते व्यक्ति के सामने बैठा है। उसका आग्रह व्यक्ति के अनुभव को सहजता से समझने का नहीं, उससे दर्शकों के लिए करुण दृश्य तैयार करवाने का है। वह ऐसे प्रश्न करता है जिनसे सामने वाला अपनी पीड़ा कहे और भावुक हो जाए।

चरण 2: दृश्य का आशय समझना प्रश्नकर्ता बार-बार व्यक्ति की शारीरिक स्थिति की ओर ध्यान खींचता है और उसके दुख को उभारना चाहता है। व्यक्ति की असहजता के सामने कर्मी का कार्यक्रम सफल बनाने का आग्रह उभरता है। उत्तर में कविता की आलोचना को आधार बनाएँ; मन से कोई नया संवाद या घटना न जोड़ें।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर दूरदर्शन कर्मी शारीरिक चुनौती झेलते व्यक्ति से बार-बार उसकी पीड़ा पूछता है। वह उसे दुख प्रकट करने और रोने के लिए उकसाता है। व्यक्ति असहज होता है, जबकि कर्मी उसकी व्यथा को दर्शकों के लिए करुण दृश्य बनाने में लगा रहता है।

चरण 4: निष्कर्ष यह दृश्य सहानुभूति के प्रदर्शन के पीछे छिपी दूरदर्शन कर्मी की संवेदनहीनता को उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: दृश्य लिखते समय प्रश्नकर्ता का दबाव, व्यक्ति की असहजता और पीड़ा के तमाशे बनने को केंद्र में रखें।

8(ii)(a). रेडियो नाटक की कहानी पूरी तरह एक्शन (क्रिया) प्रधान क्यों नहीं होनी चाहिए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; इसमें दृश्य, अभिनय और शारीरिक क्रियाएँ प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देतीं।
- संवाद, स्वर, संगीत और ध्वनि प्रभाव श्रोता की कल्पना में घटनाओं का बोध कराते हैं।

चरण 1: माध्यम की सीमा समझें रेडियो नाटक का श्रोता पात्रों को देख नहीं सकता। इसलिए केवल दौड़ने, लड़ने, इशारे करने अथवा अन्य दृश्य क्रियाओं पर टिकी कहानी का आशय उस तक स्पष्ट नहीं पहुँचता। दृश्य माध्यम में आसानी से समझ आने वाली अनेक गतिविधियाँ रेडियो पर अस्पष्ट रह सकती हैं।

चरण 2: कहानी के उपयुक्त आधार पहचानें कहानी में ऐसी घटनाएँ और स्थितियाँ होनी चाहिए जिन्हें स्वाभाविक संवाद, स्वर के उतार-चढ़ाव और आवश्यक ध्वनि प्रभावों से समझाया जा सके। पात्रों का मानसिक द्वंद्व तथा उनके संबंध संवादों के माध्यम से खुलने चाहिए। हर क्रिया का वर्णन करवाने से संवाद अस्वाभाविक और नाटक बोझिल हो जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक की कहानी पूरी तरह क्रियाप्रधान नहीं होनी चाहिए, क्योंकि क्रियाएँ दिखाई नहीं देतीं। कथा का विकास प्रभावी संवादों और ध्वनियों से होना चाहिए, ताकि श्रोता घटनाओं की कल्पना कर सके।

त्वरित सुझाव: उत्तर में रेडियो की श्रव्य प्रकृति को संवाद तथा ध्वनि प्रभावों की आवश्यकता से जोड़कर लिखें।

अथवा

8(ii)(b). रटंत से क्या अभिप्राय है ? यह बुरी लत क्यों है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रटंत का अर्थ विषय को समझे और उस पर विचार किए बिना शब्दों को यांत्रिक ढंग से याद करना है।
- रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए समझ, स्वतंत्र चिंतन और अपने अनुभवों का उपयोग आवश्यक है।

चरण 1: रटंत का अर्थ स्पष्ट करें किसी पाठ, उत्तर या कथन को उसका आशय समझे बिना बार-बार दोहराकर ज्यों का त्यों याद कर लेना रटंत कहलाता है। इसमें विद्यार्थी अर्थ और तर्क खोजने के बजाय शब्दों के क्रम को याद रखने पर निर्भर हो जाता है।

चरण 2: उसके नुकसान बताएँ रटंत बुरी लत है, क्योंकि वह स्वतंत्र सोचने, प्रश्न करने और मौलिक ढंग से लिखने की क्षमता को बाधित करती है। रटा हुआ उत्तर भूल जाने या प्रश्न का रूप बदल जाने पर विद्यार्थी कठिनाई में पड़ जाता है। विषय की समझ विकसित न होने से वह ज्ञान को नई परिस्थितियों में लागू भी नहीं कर पाता।

चरण 3: निष्कर्ष अर्थ समझे बिना सामग्री को यांत्रिक रूप से याद करना रटंत है। यह बुरी लत इसलिए है कि इससे समझ और मौलिकता का विकास रुकता है तथा व्यक्ति याद किए हुए शब्दों पर निर्भर हो जाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद स्वतंत्र चिंतन और नई परिस्थिति में ज्ञान के उपयोग पर रटंत का प्रभाव लिखें।

9(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जीवन में सदाचार का महत्त्व [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा स्पष्ट दृष्टिकोण, क्रमबद्ध विचार और प्रभावी समापन आवश्यक हैं।
- सदाचार का संबंध ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, करुणा तथा जिम्मेदार व्यवहार से है।

चरण 1: प्रारूप तय करें विषय के अनुरूप शीर्षक दें। लेख की शुरुआत सदाचार के अर्थ से करें, मध्य में उसके व्यक्तिगत और सामाजिक महत्त्व को उदाहरणों सहित समझाएँ तथा अंत में व्यवहार में उसे अपनाने की प्रेरणा दें। लगभग 120 शब्दों की सीमा बनाए रखें।

चरण 2: विचारों की योजना बनाएँ व्यक्तिगत स्तर पर सदाचार से आत्मसम्मान और विश्वास मिलता है। सामाजिक स्तर पर वह सहयोग तथा सुरक्षित वातावरण का आधार बनता है। परीक्षा में ईमानदारी, कमजोर की सहायता और गलती स्वीकार करने जैसे दैनिक उदाहरण विचारों को ठोस और विश्वसनीय बनाते हैं। केवल उपदेश देने के बजाय व्यवहार से संबंध स्पष्ट करें।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख **जीवन में सदाचार का महत्त्व**

सदाचार केवल अच्छी बातें कहना नहीं, उन्हें अपने व्यवहार में उतारना है। सत्य बोलना, दूसरों का सम्मान करना और कठिन परिस्थितियों में भी ईमानदार रहना इसके आधार हैं। विद्यार्थी परीक्षा में नकल से बचकर तथा अपने दायित्व समय पर निभाकर सदाचार का अभ्यास कर सकते हैं। सदाचारी व्यक्ति विश्वास अर्जित करता है; उसका आत्मसम्मान भी मजबूत होता है। समाज में ऐसे लोग बढ़ें तो छल, भ्रष्टाचार और हिंसा के लिए स्थान घटता है। कभी ईमानदारी का मार्ग कठिन लगता है, पर क्षणिक लाभ के लिए चरित्र खोना बड़ी हानि है। हमें छोटी बातों से शुरुआत करनी चाहिए: अपनी गलती स्वीकारें, कमजोर की सहायता करें और वचन निभाएँ। सदाचार से ही सफलता सार्थक बनती है और जीवन दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष सदाचार व्यक्ति के चरित्र और समाज के आपसी विश्वास का आधार है। लेख में उसके महत्त्व को दैनिक जीवन के व्यवहार से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक स्पष्ट विचार, कुछ ठोस उदाहरण और विषय से जुड़ा समापन रखें।

9(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

सौर ऊर्जा: ऊर्जा का अक्षय स्रोत [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े विचारों और अनुभवों को मौलिक, रोचक तथा सुसंगत भाषा में प्रस्तुत करते हैं। शीर्षक विषय के अनुकूल और आरंभ पाठक का ध्यान खींचने वाला होना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों में भूमिका, विषय का क्रमिक विकास और प्रभावपूर्ण समापन रखें। छोटे वाक्य, स्वाभाविक भाषा और उपयुक्त बिंब अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की योजना आरंभ में सूर्य और जीवन का संबंध रखें। मध्य भाग में बिजली, घरेलू उपयोग, खेती और प्रदूषण में कमी का उल्लेख करें। स्थापना की आरंभिक लागत तथा रात में धूप न मिलने की सीमा को संक्षेप में बताकर व्यावहारिक दृष्टि रखें। अंत में इस ऊर्जा को अपनाने का सकारात्मक संदेश दें। रचनात्मक लेख में पत्र का पता, संबोधन या औपचारिक समापन नहीं आता। विचारों का क्रम बनाए रखें और अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **सौर ऊर्जा: ऊर्जा का अक्षय स्रोत**

हर सुबह उगता सूर्य धरती को केवल प्रकाश नहीं, ऊर्जा का अनमोल उपहार भी देता है। उसकी किरणें हमारी बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं का स्वच्छ समाधान बन सकती हैं। सौर पैनल सूर्य के प्रकाश को बिजली में बदलकर घरों, विद्यालयों और खेतों को रोशन करते हैं। सौर कुकर, जलतापक और पंप ईंधन की बचत करते हैं। कोयले और पेट्रोलियम के विपरीत सूर्य का प्रकाश हमारे उपयोग से समाप्त नहीं होता। इसके उपयोग से धुआँ और प्रदूषण भी घटते हैं। हालाँकि पैनल लगाने की शुरुआती लागत तथा रात में धूप का अभाव चुनौतियाँ हैं, ऊर्जा भंडारण इन्हें कम कर सकता है। छतों पर सौर पैनल लगाना उज्ज्वल भविष्य की ओर सार्थक कदम है। आइए, सूर्य की शक्ति से धरती की हरियाली बचाएँ।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख विषय पर केंद्रित है। इसमें रोचक आरंभ, सुव्यवस्थित विस्तार और विषय से जुड़ा चिंतनशील समापन है। आदर्श उत्तर को दिए गए शीर्षक सहित स्वतंत्र रचनात्मक लेख के रूप में लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: सूर्य से जुड़ी किसी सजीव छवि से आरंभ करें और उपयोगिता बताते समय एक व्यावहारिक सीमा भी जोड़ें; इससे लेख संतुलित बनेगा।

9(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

रेल की खिड़की से बाहर का दृश्य [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े विचारों और अनुभवों को मौलिक, रोचक तथा सुसंगत भाषा में प्रस्तुत करते हैं। शीर्षक विषय के अनुकूल और आरंभ पाठक का ध्यान खींचने वाला होना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों में भूमिका, विषय का क्रमिक विकास और प्रभावपूर्ण समापन रखें। छोटे वाक्य, स्वाभाविक भाषा और उपयुक्त बिंब अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की योजना खिड़की को दृश्य की चौखट बनाकर यात्रा का आरंभ करें। शहर से खेतों, नदी, स्टेशन और ढलती शाम तक दृश्यों को क्रम दें। रंग, ध्वनि और गति के संकेत अनुभव को सजीव बनाएँ। अंत में यात्रा से उपजी अनुभूति जोड़ें। देश के किसी निश्चित स्थान या मार्ग का अनावश्यक नाम देने की जरूरत नहीं है। रचनात्मक लेख में पत्र का पता, संबोधन या औपचारिक समापन नहीं आता। विचारों का क्रम बनाए रखें और अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **रेल की खिड़की से बाहर का दृश्य**

रेल चली तो लगा, जैसे खिड़की में चलचित्र चलने लगा हो। शहर की ऊँची इमारतें पीछे छूटीं और हरे खेत सामने फैल गए। सुनहरी धूप

में फसलें लहरा रही थीं। कहीं किसान काम कर रहे थे, कहीं बच्चे हाथ हिलाकर यात्रियों का अभिवादन कर रहे थे। पटरियों के पास खड़े पेड़ तेजी से पीछे भागते लगते, जबकि दूर की पहाड़ियाँ धीरे खिसकती दिखाई देतीं। पुल आया तो नीचे बहती नदी चाँदी की पट्टी जैसी चमक उठी। छोटे स्टेशन पर चाय की पुकार सुनाई दी और जीवन की चहलपहल दिखी। ढलती शाम ने आकाश में केसरिया रंग भर दिया। मैं सोचने लगा, यह खिड़की केवल बाहर का दृश्य नहीं दिखाती; यह अपने देश की विविधता और जीवन की निरंतर गति से भी परिचय कराती है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख विषय पर केंद्रित है। इसमें रोचक आरंभ, सुव्यवस्थित विस्तार और विषय से जुड़ा चिंतनशील समापन है। आदर्श उत्तर को दिए गए शीर्षक सहित स्वतंत्र रचनात्मक लेख के रूप में लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: दृश्यों की सूची बनाने के बजाय उन्हें यात्रा के क्रम में जोड़ें; एक रंग, एक ध्वनि और अपनी एक अनुभूति अवश्य शामिल करें।

10(क). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

"मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ" 'आत्मपरिचय' कविता से उद्धृत इस पंक्ति का क्या आशय है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता 'आत्मपरिचय' में कवि सांसारिक जीवन से जुड़ा है, पर उसकी रूढ़ियों और दूसरों की अपेक्षाओं के अधीन नहीं है।
- 'भव' का अर्थ संसार और 'मौजों' का अर्थ जीवन की लहरें हैं। यहाँ बहना निष्क्रियता नहीं, जीवन की बदलती परिस्थितियों में अपनी मस्ती बनाए रखना है।

चरण 1: शब्दों का सांकेतिक अर्थ समझिए समुद्र की लहरों की तरह संसार में सुख-दुःख और अनुकूल-प्रतिकूल स्थितियाँ आती रहती हैं। कवि का जीवन इन्हीं के बीच चलता है। वह जीवन से पलायन नहीं करता; संसार का भार और उससे मिले अनुभव साथ लेकर चलता है। इसलिए पंक्ति को केवल मौज-मस्ती करने अथवा जिम्मेदारियों से भागने के अर्थ में नहीं लेना चाहिए।

चरण 2: कवि की जीवन-दृष्टि स्पष्ट कीजिए कवि प्रेम, संवेदना और अपने अंतर्मन के अनुरूप जीता है। संसार की स्वीकृति या निंदा उसकी प्रसन्नता का अंतिम आधार नहीं है। बदलती परिस्थितियों में भी वह अपनी आंतरिक स्वतंत्रता नहीं खोता। इसी आनंदपूर्ण और सहज स्वभाव को 'मस्त बहा करता हूँ' में व्यक्त किया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में कवि जीवन को संसार की लहरों के बीच बहने के समान मानता है। सुख-दुःख और संघर्ष आते रहते हैं, फिर भी वह अपने प्रेम, संवेदना और मस्ती को बनाए रखता है। वह सांसारिक रूढ़ियों तथा प्रशंसा-निंदा से नियंत्रित होकर नहीं जीता। अपने अंतर्मन के अनुसार सहज और स्वतंत्र जीवन बिताना ही उसकी मस्ती का आशय है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ लिखते समय भव को संसार और मौजों को जीवन की बदलती परिस्थितियों से जोड़िए; मस्ती को गैरजिम्मेदारी न मानिए।

10(ख). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'कविता के बहाने' कविता के आधार पर लिखिए कि कविता की विकास-प्रक्रिया फूलों की तरह होने पर भी फूल उसका मर्म क्यों नहीं समझ सकते ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता 'कविता के बहाने' कविता की उड़ान, खिलने और खेल की छवियों से रचनाशीलता की असीमता समझाती है।
- फूल और कविता दोनों में खिलने का गुण है, पर कविता का अर्थ और प्रभाव देश-काल तथा बाहरी रूप की सीमाओं से आगे फैलता

है।

चरण 1: समान विकास-प्रक्रिया पहचानिए फूल कली से विकसित होकर खिलता है और अपनी सुंदरता तथा सुगंध फैलाता है। कविता भी कवि के मन में जन्म लेकर शब्दों में खिलती है और पाठक के मन को आनंदित करती है। इस समानता के कारण कवि ने कविता की रचना तथा उसके विस्तार के लिए फूल के खिलने का बिंब लिया है।

चरण 2: दोनों के विस्तार का अंतर बताइए फूल का जीवन और उसकी सुगंध का फैलाव सीमित है; वह मुरझा जाता है। कविता की अनुभूति और अर्थ का विस्तार ऐसी सीमा में नहीं बँधता। अलग-अलग समय और स्थान के पाठक उससे जुड़ते हैं। अतः सीमित खिलने वाला फूल कविता के बिना मुरझाए खिलते रहने का रहस्य नहीं समझ सकता। कविता का सौंदर्य केवल दृश्य रूप तक सीमित नहीं होता; वह मनुष्य की कल्पना और संवेदना में बार-बार नए अर्थ प्राप्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष फूल और कविता दोनों खिलते हैं तथा आनंद देते हैं। किंतु फूल का जीवन, रंग और सुगंध सीमित समय तथा स्थान तक रहते हैं; अंततः वह मुरझा जाता है। कविता भावों और कल्पना में खिलती है तथा देश-काल की सीमाओं से आगे पाठकों को प्रभावित करती रहती है। इसलिए फूल कविता के बिना मुरझाए निरंतर खिलने के मर्म को नहीं समझ सकता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले खिलने की समानता और फिर फूल की सीमा तथा कविता की असीमता का अंतर स्पष्ट कीजिए।

10(ग). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कथ्य अधिक महत्त्वपूर्ण है अथवा माध्यम ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता 'बात सीधी थी पर' भाषा को अनावश्यक रूप से जटिल बनाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।
- कथ्य वह बात है जो कही जानी है; माध्यम उसे व्यक्त करने वाली भाषा है। भाषा की सार्थकता कथ्य को प्रभावी ढंग से पहुँचाने में है।

चरण 1: कविता की स्थिति समझिए कवि के पास कहने के लिए सीधी बात है, किंतु भाषा को अधिक प्रभावशाली बनाने के प्रयत्न में वह उसे उलझा देता है। शब्दों का आडंबर बढ़ने पर मूल आशय स्पष्ट नहीं रह जाता। इस प्रकार कविता दिखाती है कि केवल कठिन शब्द या चमत्कारपूर्ण शैली अच्छी अभिव्यक्ति की गारंटी नहीं हैं।

चरण 2: कथ्य की प्रधानता और माध्यम की भूमिका बताइए कथ्य अभिव्यक्ति का उद्देश्य है और भाषा उसका साधन। यदि भाषा के पीछे पड़कर बात ही बिगड़ जाए तो माध्यम अपने उद्देश्य में विफल हो जाता है। इसका अर्थ भाषा की उपेक्षा करना नहीं है। कथ्य के अनुकूल सहज, सटीक और संप्रेषणीय भाषा चुनना चाहिए, जिससे अर्थ की शक्ति और स्वाभाविकता बनी रहे। इसलिए कथ्य और माध्यम में ऐसा संतुलन आवश्यक है जिसमें शैली अर्थ को ढकने के बजाय उसे उजागर करे।

चरण 3: निष्कर्ष 'बात सीधी थी पर' में कथ्य अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि भाषा का उद्देश्य बात को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से पहुँचाना है। भाषा के अनावश्यक कौशल और आडंबर में उलझने से सहज बात भी जटिल होकर अपना प्रभाव खो देती है। माध्यम की सार्थकता कथ्य के अनुकूल होने में है। इसलिए अभिव्यक्ति सहज, सटीक और संप्रेषणीय होनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: कथ्य की प्रधानता बताते हुए भाषा को निरर्थक न कहिए; उसका महत्त्व कथ्य को सहजता से संप्रेषित करने में है।

11(क). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : शारीरिक चुनौती झेल रहे व्यक्ति की शब्दहीन पीड़ा को मीडियाकर्मी किस प्रकार अभिव्यक्त कराना चाहता है ? क्या वह अपने उद्देश्य में सफल होता है ? कारण लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' में मीडियाकर्मी दूसरे की पीड़ा को दर्शकों के लिए भावुक दृश्य बनाना चाहता है।
- उत्तर में पीड़ा व्यक्त कराने की युक्ति और उसकी विफलता के कारण, दोनों स्पष्ट करने हैं।

चरण 1: पीड़ा उभारने की युक्ति पहचानिए मीडियाकर्मी शारीरिक चुनौती झेल रहे व्यक्ति से बार-बार उसकी तकलीफ और दुःख के बारे में पूछता है। वह उसे रुलाकर उसके आँसू और चेहरे के भाव कैमरे पर दिखाना चाहता है। उसकी चिंता व्यक्ति की सहायता करने की अपेक्षा दर्शकों को भावुक कर देने वाला दृश्य प्राप्त करने की है।

चरण 2: उद्देश्य की सफलता का मूल्यांकन कीजिए वह उस व्यक्ति की भीतरी पीड़ा को स्वाभाविक और संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त कराने में सफल नहीं होता। दबाव डालकर पूछे गए प्रश्न पीड़ा को समझने का विकल्प नहीं हैं। कार्यक्रम को रोचक बनाने की व्यावसायिक जल्दबाजी में उसकी मानवीय संवेदना का अभाव प्रकट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडियाकर्मी बार-बार दुःख और तकलीफ के प्रश्न पूछकर उसे रुलाना तथा आँसू कैमरे में दिखाना चाहता है। वह पीड़ा को सच्चे रूप में अभिव्यक्त कराने में सफल नहीं होता, क्योंकि उसके प्रश्न सहानुभूतिपूर्ण संवाद के बजाय संवेदनहीन दबाव और प्रदर्शन का साधन हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों पक्ष पूरे कीजिए: मीडियाकर्मी की रुलाने की कोशिश और संवेदनहीनता के कारण वास्तविक पीड़ा व्यक्त कराने में विफलता।

11(ख). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'बादल राग' कविता के संदर्भ में 'पंक' और 'जलज' का प्रतीकार्थ लिखते हुए स्पष्ट कीजिए कि क्रांति का इन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक और जलज के सामाजिक प्रतीकों की पहचान तथा क्रांति का विषम प्रभाव समझना।
- पाठ के प्रसंग और उसके भाव को जोड़कर प्रश्न के सभी पक्षों का संक्षिप्त उत्तर देना।

चरण 1: प्रतीकों का अर्थ समझें पंक अर्थात कीचड़ समाज के उपेक्षित, शोषित और साधनहीन लोगों का प्रतीक है। जलज अर्थात कमल सुख-सुविधाओं में रहने वाले संपन्न वर्ग का प्रतीक है। कविता में दोनों के बाहरी सौंदर्य के आधार पर मूल्यांकन नहीं किया गया है; उनकी सामाजिक स्थिति और परिवर्तन से उनके संबंध का संकेत है।

चरण 2: क्रांति का प्रभाव जोड़ें बादल क्रांति का प्रतीक है। उसकी वर्षा से पंक का जीवन हरा-भरा और आशापूर्ण होता है। इसके विपरीत, संपन्न वर्ग अपनी सुविधाएँ और प्रभुत्व खोने की आशंका से भयभीत होता है। इसलिए वर्षा या क्रांति का स्वागत तथा उसका भय, दोनों वर्गों की अलग परिस्थितियों को व्यक्त करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पंक शोषित, उपेक्षित जनसमुदाय का और जलज संपन्न, सुविधाभोगी वर्ग का प्रतीक है। क्रांति से पीड़ित जनता में नई आशा और जीवन का संचार होता है; संपन्न वर्ग अपने वैभव तथा अधिकार छिनने की आशंका से भयभीत हो उठता है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का केवल शाब्दिक अर्थ न लिखें; प्रत्येक वर्ग पर क्रांति का अलग प्रभाव अवश्य जोड़ें।

11(ग). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'रुबाइयाँ' शीर्षक से ली गई पंक्ति – 'किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को' – के संदर्भ में लिखिए कि बच्चा माँ की ओर क्यों देख रहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- माँ और बच्चे के सहज वात्सल्यपूर्ण संबंध तथा घरेलू दृश्य का आशय समझना।
- पाठ के प्रसंग और उसके भाव को जोड़कर प्रश्न के सभी पक्षों का संक्षिप्त उत्तर देना।

चरण 1: दृश्य का संदर्भ पहचानें रुबाई में माँ बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है, उसके उलझे बालों में कंघी करती है और फिर उसे अपने घुटनों के बीच लेकर कपड़े पहनाती है। बच्चा इसी आत्मीय देखभाल के समय माँ का मुख देखता है। यह किसी वस्तु की माँग या भय का दृश्य नहीं, माँ-बच्चे के परस्पर प्रेम का चित्र है।

चरण 2: बच्चे की दृष्टि का भाव समझें माँ के स्नेहमय स्पर्श और देखभाल से बच्चा सुरक्षित तथा प्रसन्न अनुभव करता है। उसकी भोली दृष्टि माँ के प्रति लगाव, विश्वास और प्यार व्यक्त करती है। उत्तर में नहलाने और कपड़े पहनाने का प्रसंग रखना आवश्यक है, क्योंकि प्रश्न उसी विशिष्ट दृश्य में बच्चे के देखने का कारण पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ बच्चे को नहलाकर, उसके बाल सँवारकर, घुटनों के बीच लेकर कपड़े पहना रही है। उसकी ममतामयी देखभाल से बच्चा सुख और सुरक्षा अनुभव करता है। इसलिए वह प्रेम, आत्मीयता और सहज विश्वास से माँ के चेहरे की ओर देख रहा है।

त्वरित सुझाव: बच्चे की प्रेमभरी दृष्टि समझाते समय नहलाने, बाल सँवारने और कपड़े पहनाने के प्रसंग से उत्तर जोड़ें।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए कि बाज़ार का वह कौन-सा रूप है जिसका पोषण करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र न होकर नीतिशास्त्र है ? और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार में मनुष्यता, सद्भाव और आवश्यकता की पूर्ति के स्थान पर छल और शोषण आने से उसका उद्देश्य विकृत हो जाता है।
- पाठ के संबंधित प्रसंग में लेखक ऐसे व्यापार को अर्थशास्त्र के बजाय अनीतिशास्त्र से जोड़ता है।

चरण 1: संबंधित बाज़ार का रूप पहचानें लेखक उस बाज़ार की बात करता है जिसमें मनुष्य के लिए सद्भाव शेष नहीं रहता। ग्राहक और विक्रेता एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं। जरूरत की वस्तु प्राप्त करने और उचित मूल्य पर देने के स्थान पर एक-दूसरे से अधिक लाभ खींचने की प्रवृत्ति प्रमुख हो जाती है। यह वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति करने वाला सार्थक बाज़ार नहीं, लोभ और शोषण से संचालित व्यापार है।

चरण 2: लेखक के कथन का कारण समझें ऐसे बाज़ार में खरीददार तथा बेचने वाले का संबंध सहयोगी मनुष्यों का संबंध नहीं रह जाता। दोनों अपने लाभ के लिए दूसरे की हानि करने को तैयार रहते हैं। फलस्वरूप बाज़ार मनुष्य की उपयोगिता पूरी करने के बजाय उसे आकर्षण, असंतोष और होड़ में फँसाता है। लेखक व्यंग्यपूर्वक बताता है कि इसका पोषण करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें मनुष्य और उसके हित के लिए स्थान नहीं बचता।

चरण 3: पाठ के शब्द का आशय स्पष्ट करें प्रश्न में आए नीतिशास्त्र शब्द का संदर्भ समझते समय मूल पाठ का भेद ध्यान में रखना चाहिए। लेखक का प्रयोग अनीतिशास्त्र है। अनीति का अर्थ यहाँ छल-कपट, अमानवीयता और शोषण है। अतः उत्तर में नैतिक तथा सद्भावपूर्ण व्यापार का समर्थन बताना इस प्रसंग का उलटा अर्थ होगा। संबंधित बाजार की पहचान परस्पर ठगी और मानवीय सद्भाव के अभाव से होती है।

चरण 4: निष्कर्ष यह वह बाज़ार है जिसमें ग्राहक और विक्रेता परस्पर ठगने की घात में रहते हैं तथा मनुष्यता और सद्भाव नष्ट हो जाते हैं। इसका आधार आवश्यकता की पूर्ति के बजाय लोभ, छल और शोषण है। इसलिए लेखक इसका पोषण करने वाले शास्त्र को अर्थशास्त्र

नहीं मानता। मूल पाठ में इसके लिए नीतिशास्त्र नहीं, अनीतिशास्त्र शब्द आया है।

त्वरित सुझाव: इस प्रसंग में परस्पर ठगी और सद्भाव का अभाव लिखें; मूल पाठ के अनीतिशास्त्र शब्द का अर्थ स्पष्ट रखें।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'अपनी जरूरत पीछे रखकर दूसरे के कल्याण के लिए जो कुछ दो, वह त्याग होता है।' – 'काले मेघा पानी दे' पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- त्याग, दान और सामूहिक कल्याण की भावना को जीजी के व्यवहार से समझना।
- पाठ के प्रसंग और उसके भाव को जोड़कर प्रश्न के सभी पक्षों का संक्षिप्त उत्तर देना।

चरण 1: त्याग और सामान्य दान का अंतर बताएँ अपनी जरूरत पूरी कर लेने के बाद बची हुई वस्तु देना उपयोगी हो सकता है, पर कथन में त्याग का अर्थ इससे आगे है। जब व्यक्ति स्वयं अभाव सहकर अपनी आवश्यक वस्तु किसी दूसरे के कल्याण के लिए देता है, तब वह अपने स्वार्थ पर परहित को प्राथमिकता देता है। यहाँ वस्तु की मात्रा से अधिक महत्त्व देने वाले की भावना और उसके द्वारा स्वीकार किए गए कष्ट का है।

चरण 2: पाठ की घटना से आशय समझाएँ अकाल और जल-संकट के समय इंदर सेना के लड़के पानी माँगते हैं। लेखक पानी बहाने को व्यर्थ मानता है, किंतु जीजी उन्हें पानी देती हैं। उनके अनुसार संकट में भी दूसरों के लिए अपनी आवश्यकता का कुछ अंश छोड़ना त्याग है। वे बीज बोने का उदाहरण देती हैं: किसान अच्छे बीज बचाकर रखने के बजाय उन्हें धरती को देता है, तभी आगे फसल प्राप्त होती है। यह उदाहरण देने और व्यापक कल्याण के संबंध को समझाता है।

चरण 3: भावना और सामाजिक संदेश जोड़ें जीजी का तर्क साझा संकट में सहयोग, उदारता और विश्वास को महत्त्व देता है। उत्तर का केंद्र यह नहीं कि मनुष्य अपनी जरूरत से पूरी तरह मुक्त हो जाए, बल्कि यह है कि वह केवल अपनी सुविधा को अंतिम मूल्य न माने। पानी की कमी के संदर्भ में दूसरे के लिए पानी देना इसी कठिन चुनाव को स्पष्ट करता है और सामूहिक हित के लिए योगदान की प्रेरणा देता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस पंक्ति का आशय है कि अपनी आवश्यकता की वस्तु भी दूसरों के हित में देना सच्चा त्याग है। जल-संकट के बावजूद जीजी इंदर सेना को पानी देती हैं। वे बीज बोने का उदाहरण देकर समझाती हैं कि कुछ छोड़ने से ही व्यापक लाभ मिलता है। उनका व्यवहार स्वार्थ से ऊपर उठकर सहयोग और सामूहिक कल्याण की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: जीजी का पानी देना और बीज बोने का उदाहरण लिखें; त्याग में अपनी जरूरत का अंश छोड़ना स्पष्ट करें।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'शिरीष के फूल' पाठ से उद्धृत पंक्ति 'महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं' – का आशय स्पष्ट करते हुए लिखिए कि लेखक ने कालदेवता से बचने का क्या उपाय बताया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी प्रसन्न रहकर जीने की प्रेरणा देता है।
- महाकाल समय और अनिवार्य परिवर्तन का प्रतीक है; जड़ आसक्ति विनाश का कारण बनती है।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग समझना लेखक प्रकृति में निरंतर होने वाले परिवर्तन को समय का कठोर प्रहार बताते हैं। पुरानी चीजें समाप्त होती हैं और नया जीवन उनका स्थान लेता है। शिरीष के पुराने फल भी नए फलों के आने पर झड़ जाते हैं। इसलिए समय के कोड़ों का

आशय केवल किसी एक व्यक्ति का दुख नहीं, बल्कि संसार का अविराम परिवर्तन है।

चरण 2: बचने के उपाय का आशय कालदेवता से बचने का अर्थ अमर हो जाना नहीं है। लेखक जड़ता और मोह छोड़कर समय के साथ चलने की शिक्षा देते हैं। शिरीष की तरह विपरीत वातावरण में भी जीवन का रस लेना और सहज प्रसन्नता बनाए रखना चाहिए। पुरानी स्थिति से चिपके रहने पर परिवर्तन के आघात अधिक दुख देते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति का आशय है कि समय निरंतर परिवर्तन के कठोर प्रहार कर रहा है। पुरानी वस्तुएँ मिटती हैं और नई उनका स्थान लेती हैं। इससे बचने का उपाय जड़ता तथा पुरानी स्थितियों का मोह छोड़कर बदलते समय के साथ चलना है। लेखक शिरीष की तरह प्रतिकूलताओं में भी अनासक्त, मस्त और जीवंत बने रहने की प्रेरणा देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक ने परिवर्तन स्वीकार करके अनासक्त और मस्त भाव से जीने को काल के आघातों से बचने का उपाय बताया है।

त्वरित सुझाव: महाकाल को समय का प्रतीक मानकर पहले परिवर्तन का अर्थ, फिर जड़ता छोड़ने का उपाय स्पष्ट करें।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए कि बीमारी की विभीषिका से क्रंदन करता हुआ गाँव और अधिक भयावह रूप किन परिस्थितियों में ग्रहण कर लेता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महामारी का वर्णन ध्वनि, अंधकार और सन्नाटे के मेल से भय उत्पन्न करता है।
- उत्तर में रात के वातावरण और रोगियों के करुण स्वरों का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: भयावह वातावरण के कारण दिन में सुनाई देने वाला करुण क्रंदन रात के गहरे सन्नाटे में अधिक डरावना हो उठता था। अँधेरी रात में सियारों और उल्लुओं की आवाजें तथा कुत्तों का रोना मृत्यु की आशंका बढ़ाते थे। रोगियों की कराह और प्रियजनों का विलाप इस वातावरण को और भयंकर बनाते थे। इस प्रकार बाहरी वातावरण और मनुष्य की पीड़ा मिलकर मृत्यु का आतंक गहरा करते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रात के घने अंधकार और सन्नाटे में गाँव का रूप अधिक भयावह हो जाता था। सियारों तथा उल्लुओं की आवाजें, कुत्तों का रोना, रोगियों की कराह और परिजनों का करुण विलाप मिलकर महामारी से त्रस्त लोगों का भय बढ़ा देते थे।

चरण 3: निष्कर्ष अंधकार, सन्नाटे, पशु-पक्षियों की डरावनी आवाजों और रोगियों की कराह से गाँव की भयावहता बढ़ जाती थी।

त्वरित सुझाव: वातावरण बताते समय केवल बीमारी न लिखें; अंधकार, सन्नाटा और करुण ध्वनियों का उल्लेख भी करें।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए कि भारत में जाति आधारित ऐसी कौन-सी व्यवस्था है जो पूरे विश्व में कहीं नहीं पाई जाती ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर श्रम के विभाजन और जन्म के आधार पर श्रमिकों के विभाजन में अंतर करते हैं।
- जाति-प्रथा श्रमिकों को ऊँच-नीच के स्थायी वर्गों में बाँटती है।

चरण 1: विशिष्ट व्यवस्था की पहचान दुनिया के अनेक समाजों में काम का विभाजन होता है, पर भारत की जाति-व्यवस्था काम करने वालों को भी जन्म के आधार पर अलग-अलग श्रेणियों में बाँटती है। ये श्रेणियाँ समान स्तर की नहीं हैं; इनके बीच ऊँच-नीच का क्रम है।

व्यक्ति की योग्यता और रुचि के स्थान पर जाति उसका पेशा निर्धारित करती है। यह व्यवस्था मनुष्य की व्यक्तिगत पसंद को भी सीमित करती है और सामाजिक असमानता को स्थायी बनाती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भारत की जाति-प्रथा में श्रम के साथ श्रमिकों का भी जन्म के आधार पर विभाजन होता है। श्रमिकों को ऊँच-नीच के क्रम में स्थायी वर्गों में बाँट दिया जाता है। ऐसा श्रेणीबद्ध श्रमिक-विभाजन विश्व के किसी अन्य समाज में नहीं पाया जाता।

चरण 3: निष्कर्ष विशिष्ट व्यवस्था जन्म-आधारित, ऊँच-नीच के क्रम वाला श्रमिक-विभाजन है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल श्रम-विभाजन लिखकर न रुकें; श्रमिक-विभाजन और ऊँच-नीच का क्रम अवश्य स्पष्ट करें।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
समाज को अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने के लिए आंबेडकर ने क्या सुझाव दिए हैं ? अपने शब्दों में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाज की उपयोगिता व्यक्ति की क्षमताओं के विकास और उनके उपयुक्त प्रयोग से बढ़ती है।
- पेशा चुनने का आधार जन्म नहीं, व्यक्ति की रुचि, योग्यता और प्रशिक्षण होना चाहिए।

चरण 1: सुझाव का तर्क समझना जन्म से पेशा निर्धारित कर देने पर व्यक्ति अपनी स्वाभाविक क्षमता का उपयोग नहीं कर पाता। इसलिए समाज को उसके लिए शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए। विकसित योग्यता के अनुसार काम चुनने की स्वतंत्रता मिलने पर व्यक्ति अधिक कुशलता से काम करेगा और समाज को भी अधिक लाभ होगा।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आंबेडकर के अनुसार समाज को प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताएँ विकसित करने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण देना चाहिए। उसे अपनी रुचि तथा योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता मिले। जन्म या जाति के आधार पर पेशा थोपने से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त नहीं हो सकती।

चरण 3: निष्कर्ष शिक्षा, प्रशिक्षण, क्षमता-विकास और योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता आंबेडकर के प्रमुख सुझाव हैं।

त्वरित सुझाव: अधिकतम उपयोगिता के उत्तर को क्षमता-विकास और स्वतंत्र व्यवसाय-चयन, इन दो आधारों से जोड़ें।

14(क). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'बच्चों द्वारा घर में लाए गए भौतिक सुख-सुविधा के साधनों के प्रति यशोधर पंत जी की क्या धारणा थी ? सिल्वर वैडिंग' पाठ के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर पंत सादगी और मितव्ययिता को महत्त्व देते हैं।
- बच्चों की आधुनिक जीवन-शैली से उनकी असहमति पीढ़ियों के मूल्य-संघर्ष को प्रकट करती है।

चरण 1: यशोधर पंत का दृष्टिकोण यशोधर पंत सीमित साधनों में सादा जीवन बिताने के अभ्यस्त थे। बच्चों द्वारा घर में जुटाए गए आधुनिक उपकरण और सुविधाएँ उन्हें सहज सुख नहीं देती थीं। वे इन्हें आवश्यक जीवन की अपेक्षा अनावश्यक खर्च और दिखावे से जोड़ते थे। आधुनिक वस्तुओं के साथ वे आत्मीय संबंध स्थापित नहीं कर पाते थे।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर यशोधर पंत जी बच्चों द्वारा लाए गए भौतिक सुख-सुविधा के साधनों को अनावश्यक खर्च और दिखावे की वस्तुएँ मानते थे। सादगी तथा मितव्ययिता में विश्वास रखने के कारण वे इन आधुनिक सुविधाओं को सहज स्वीकार नहीं कर पाते थे और उनसे असहज रहते थे।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर पंत आधुनिक सुविधाओं को अनावश्यक खर्च मानते थे; उनकी सादगी बच्चों की उपभोक्तावादी जीवन-शैली से मेल नहीं खाती थी।

त्वरित सुझाव: पंत जी की धारणा समझाते समय सादगी, मितव्ययिता और आधुनिक सुविधाओं से असहजता को जोड़ें।

14(ख). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए कि पाठशाला में आनंदा का पहले दिन का अनुभव कैसा रहा ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंदा की पढ़ने की आकांक्षा के साथ विद्यालय में लौटने पर उसके सामने आई सामाजिक और मानसिक कठिनाइयाँ भी चित्रित हुई हैं।
- पहले दिन के अनुभव का उत्तर उसकी वेशभूषा, सहपाठियों की प्रतिक्रिया और उससे उत्पन्न मनःस्थिति को जोड़कर देना चाहिए।

चरण 1: सहपाठियों के व्यवहार का आधार आनंदा गाँव की परंपरागत वेशभूषा में पाठशाला पहुँचा था। उसकी धोती और सिर पर लिपटा गमछा लड़कों के लिए हँसी का विषय बन गए। वे उसे 'मंत्री' कहकर चिढ़ाने लगे। इससे पढ़ाई के लिए उत्साहित बालक को पहले ही दिन उपहास का सामना करना पड़ा।

चरण 2: अनुभव का प्रभाव आनंदा को अपनी वेशभूषा के कारण साथियों से अलग होने का अनुभव हुआ। लड़कों की हँसी और छेड़छाड़ ने उसे संकोच तथा परेशानी में डाल दिया। उत्तर में केवल विद्यालय आने की खुशी लिखना पर्याप्त नहीं है; सहपाठियों के व्यवहार से उत्पन्न अप्रिय अनुभव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पाठशाला में आनंदा का पहला दिन अप्रिय रहा। उसकी धोती और सिर पर लिपटे गमछे को देखकर लड़के हँसे तथा 'मंत्री' कहकर चिढ़ाने लगे। उनके उपहास और शरारतों से वह संकुचित तथा परेशान हुआ और उसे अकेलापन महसूस हुआ।

चरण 4: निष्कर्ष पहले दिन आनंदा को सहपाठियों के उपहास के कारण संकोच और असहजता का सामना करना पड़ा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में वेशभूषा, 'मंत्री' कहकर चिढ़ाना और आनंदा की असहजता को क्रम से जोड़ें।

14(ग). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

"सिंधु घाटी सभ्यता' में प्रभुत्व या दिखावे के तेवर का अभाव था' – सोदाहरण सिद्ध कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में सिंधु सभ्यता की पहचान उसकी सुव्यवस्थित नगर-योजना, कलात्मक रुचि और नागरिक जीवन से की गई है।
- प्रभुत्व या दिखावे का अभाव समझाने के लिए सत्ता का वैभव प्रदर्शित करने वाली संरचनाओं की अनुपस्थिति और उपयोगी निर्माणों की उपस्थिति को साथ देखना चाहिए।

चरण 1: सत्ता के प्रदर्शन का अभाव मोहनजोदड़ो के अवशेषों में भव्य राजप्रासाद, विशाल मंदिर और राजाओं की समाधियाँ नहीं मिलतीं। दूसरे प्राचीन समाजों में ऐसी इमारतें शासकों की शक्ति और वैभव का प्रदर्शन करती हैं। यहाँ विशाल राजमूर्तियों का भी अभाव है। इसलिए उपलब्ध अवशेषों में प्रभुत्व जताने की प्रवृत्ति प्रमुख नहीं दिखती।

चरण 2: नागरिक उपयोगिता के उदाहरण नियोजित सड़कें, जल-निकासी की व्यवस्था और सार्वजनिक स्नानागार नागरिक जीवन के प्रति सजगता दिखाते हैं। मुहरों, छोटे शिल्पों और उपयोग की वस्तुओं में कला का विकास दिखाई देता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि कलात्मकता दैनिक जीवन में रची-बसी थी; वह केवल शासक के दिखावे का साधन नहीं थी।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर सिंधु सभ्यता में विशाल राजप्रासाद, भव्य मंदिर, राजाओं की समाधियाँ और प्रभुत्व जताती बड़ी मूर्तियाँ नहीं मिलतीं। इसके विपरीत सुव्यवस्थित सड़कें, नालियाँ और सार्वजनिक स्नानागार मिलते हैं। ये उदाहरण दिखावे के स्थान पर नागरिक सुविधा तथा सामुदायिक जीवन को महत्त्व देना दिखाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता के अवशेष सत्ता के प्रदर्शन से अधिक नागरिक व्यवस्था और सहज कलात्मकता का परिचय देते हैं।

त्वरित सुझाव: एक उदाहरण सत्ता-प्रदर्शन के अभाव का और दूसरा जनसुविधा के विकास का देकर कथन सिद्ध करें।